



कर्नाटक सरकार

हिंदी वल्लरी

तृतीय भाषा हिंदी
Third Language Hindi
PART - 2

10

दसवीं कक्षा
Tenth Standard

Karnataka Text Book Society (R.)

6th Cross, Malleshwaram,
Bengaluru- 560 003.

अनुक्रमणिका



क्र.सं.	पाठ	विधा	पृ.सं.
10.	दुनिया में पहला मकान	लेख	1
11.	समय की पहचान	कविता	11
12.	रोबोट	कहानी	17
13.	महिला की साहस गाथा	व्यक्ति परिचय	27
14.	सूर - श्याम	पद	36
15.	कर्नाटक संपदा	निबंध	42
16.	बाल-शक्ति	लघु नाटिका	55
17.	कोशिश करनेवालों की हार नहीं होती	कविता	66

परिशिष्ट

(ई) व्याकरण

74

10. दुनिया में पहला मकान



डॉ. विजया गुप्ता-

मानव को सतत प्रयत्नशील होना चाहिए। दूसरों की सहायता से वह नवीन वस्तुओं को बनाना भी सीख सकता है। न केवल लोगों से अपितु प्राणियों से भी हमें सीख मिलती है।

पूर्वोत्तर भारत में बसनेवाले सिंगफो आदिवासियों में जो कहानी कही जाती है, उसके अनुसार सबसे पहले आदमी को मकान बनाना बहुत-से पशुओं ने सिखाया।



उन दिनों आदमी गुफाओं में और पेड़ों के नीचे रहता था। उस समय किन्दू लालिम और किंचा लालीदाम नामक दो दोस्तों ने तय किया कि वे मकान बनाएँगे। मुश्किल यह थी कि वे नहीं जानते थे कि मकान कैसे बनाए जाते हैं, इसलिए वे पशुओं से पूछ-ताछ करने के लिए जंगल की ओर चल पड़े।

उनकी मुलाकात सबसे पहले हाथी से हुई। दोनों दोस्तों ने हाथी को नमस्कार किया, फिर कहा, “हाथी भाई, हम लोग मकान बनाना चाहते हैं। आप बता सकते हैं कि मकान कैसे बनाए जाते हैं?”

हाथी बोला, “इसमें क्या कठिनाई है? पेड़ों से लकड़ी के इतने मोटे और मजबूत गोले काट लो, जितने मेरे पैर हैं।”

दोनों दोस्तों ने आगे पूछा, “इसके बाद क्या करना पड़ेगा?”

हाथी ने उत्तर दिया, “आगे की बात तो मैं नहीं जानता। मुझे रत्ती-भर भी पता नहीं।”

दोनों दोस्त आगे बढ़े। रास्ते में उन्हें साँप मिला। दोस्तों ने साँप को रोका। उसे नमस्कार किया। बोले, “साँप भाई, हम लोग घर बनाना चाहते हैं। आप बता सकते हैं कि कैसे बनाया जाए? हाथी ने हमसे कहा है कि उसके पैर जैसे मजबूत और मोटे लकड़ी के गोले पेड़ से काट लो। उसे बस इतना ही मालूम है। आगे की बात वह नहीं जानता।”

साँप ने कहा, “ऐसा करो कि लकड़ी ऐसी पतली और लंबी काटो, जैसा मैं हूँ।”

दोनों दोस्तों ने पूछा, “इसके बाद फिर क्या करना पड़ेगा?”

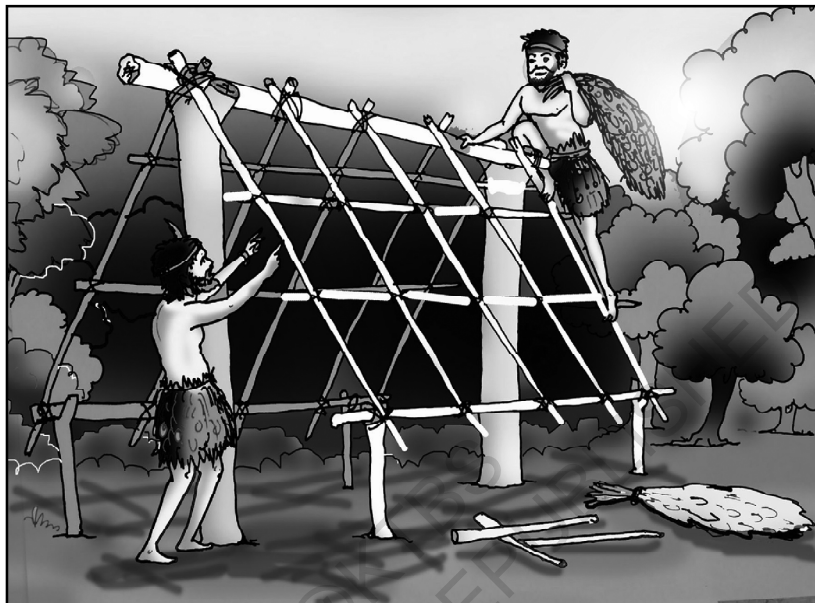
साँप ने कहा, “आगे की बात मैं नहीं जानता। मुझे रत्ती-भर पता नहीं।

दोनों दोस्त और आगे बढ़े। रास्ते में सड़क-किनारे उन्हें एक भैंस खड़ी मिली। भैंस का भैंसा मर गया था। भैंसे का मांस दूसरे जानवर खा गए थे। खाली पंजर पड़ा था। भैंस उसीके पास खड़ी दुःख मना रही थी। दोनों दोस्त भैंस के सामने पहुँचे। उसे नमस्कार किया और बोले, “भैंस बहन, हम लोग मकान बनाना चाहते हैं। आप बता सकती हैं कि कैसे बनाया जाए? हाथी ने बताया कि इतने मोटे और मजबूत गोले पेड़ों से काट लो जितने उसके पैर हैं। साँप ने कहा कि ऐसी लंबी और पतली लकड़ियाँ काट लो, जैसा वह खुद है। इसके आगे की बात न हाथी बता पाया, न साँप। बेचारे दोनों को रत्ती-भर पता नहीं।”

भैंस ने दोनों दोस्तों को अपने भैंसे का पंजर दिखाया। बोली, “जैसे इस पंजर में चार पैरों पर हड्डियाँ पड़ी हैं, उसी तरह चार मोटे गोले ज़मीन में गाड़कर उन पर पतली और लंबी लकड़ियों से छप्पर का पंजर बना लो।”

दोनों ने पूछा, “इसके बाद क्या करना होगा?”

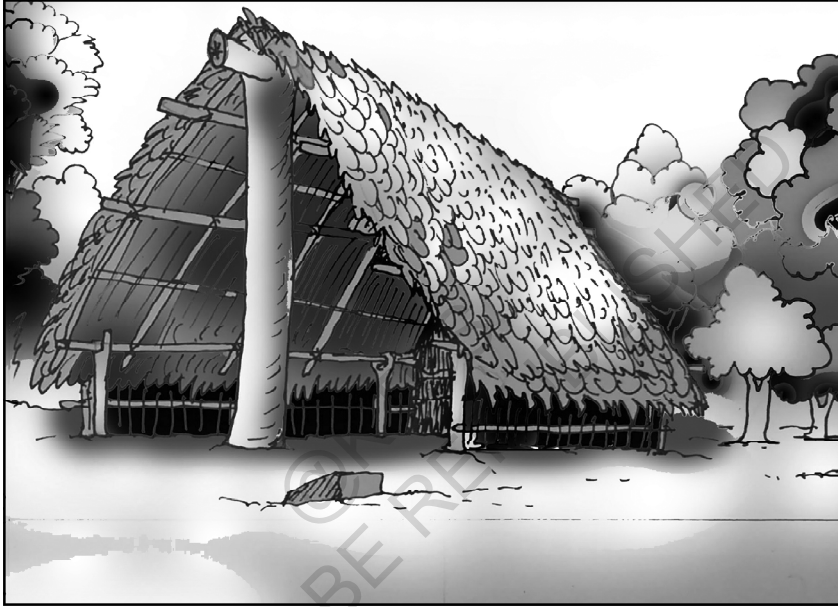
भैंस ने उत्तर दिया, “आगे की बात मैं नहीं जानती। मुझे रत्ती-भर पता नहीं।”



तब दोनों दोस्त आगे बढ़े। रास्ते में एक तालाब मिला। तालाब में एक बहुत बड़ी मछली तैर रही थी। दोनों दोस्त वहीं ठहर गए। फिर दोनों ने मछली के पास जाकर नमस्कार किया और बोले, “हम लोग मकान बनाना चाहते हैं। हाथी कहता है कि उसके पैरों जैसे मोटे और मजबूत लकड़ी के गोले पेड़ों से काट लो। साँप ने बताया कि जैसा वह है, वैसी पतली और लंबी लकड़ियाँ काट लो। भैंस ने यह दिखला दिया कि इन दोनों किस्म की लकड़ियों को कैसे जमाया जाए। इसके आगे की बात उन लोगों में से किसी को पता नहीं। कोई रत्ती-भर भी नहीं जानता।”

मछली ने कहा, “आप लोग ज़रा मेरी पीठ की पट्टियाँ ध्यान से देख लो। फिर पेड़ों से बहुत-सी पत्तियाँ तोड़ लो। इन पत्तियों को छप्पर पर उसी तरह जमा दो, जैसी मेरी पीठ पर पट्टियाँ हैं।

मछली की बात सुनकर दोस्तों की समझ में आ गया कि अब वे मकान बना सकते हैं। मकान बनाने का पूरा तरीका उन्हें मालूम हो गया। अब और कुछ जानने की ज़रूरत नहीं थी। दोनों दोस्त जंगल से लौटकर आए और एक जगह मकान बना लिया। यह दुनिया में आदमी के हाथों बना पहला मकान था।



पाठ का आशय :

अनादिकाल से मानव पशु-पक्षियों से अपने परिसर और वातावरण से कुछ-न-कुछ सीखता आ रहा है। चींटियों से गिरकर उठने का साहस सीखा है तो मुर्गी ने उसे सुबह जल्दी उठने की सीख दी है। इसी प्रकार विभिन्न पशु-पक्षियों की ध्वनियों का अनुकरण करते-करते उसने अपनी भाषा को समृद्ध बनाया है। प्रस्तुत कहानी में यही दिखाया गया है कि इन्सान ने मकान बनाना भी पशु-प्राणियों से सीखा। उसका सरल निरूपण इस कहानी में किया गया है।

लेखिका परिचय : डॉ. विजया गुप्ता

डॉ. विजया गुप्ता जी का जन्म 21 दिसंबर सन् 1946 को हुआ। आपने लाइब्रेरी साइंस में स्नातकोत्तर तथा पीएच.डी की उपाधि प्राप्त की है। कुरुक्षेत्र विश्वविद्यालय में हिंदी प्राध्यापक के रूप में काम करने के बाद गांधी नेशनल म्यूसियम तथा दिल्ली विश्वविद्यालय में लाइब्रेरियन का काम किया है। सेवा से निवृत्त होने के बाद आप लेखन कार्य में व्यस्त हैं।

आपकी प्रकाशित पुस्तकें हैं - हमारे बहादुर बच्चे (सूचना और प्रसारण मंत्रालय), दोस्ती किताबों से (Children's Literature and Reading Habbit), बाल कहानी संग्रह, दुनिया में पहला मकान, टेलीफोन की मरम्मत, फीस की जिम्मेदारी, बुद्धिमान न्यायाधीश आदि।

शब्दार्थ :

मकान - घर, गृह ; रत्ती - थोड़ा , खुद - स्वयं , हड्डी - ముఠ, Bone ; मुश्किल - कष्ट , तय करना - निश्चय करना , मजबूत - दृढ़ , गाड़ना - गड़ड़ा खोदकर उसमें कोई वस्तु रखकर मिट्टी से ढकना , पतली - दुबली, जो मोटा न हो ; तालाब - सरोवर , किस्म - प्रकार, भाँति, ढंग, तर्ज ; तरीका - रीति, ढंग ; गोले - वृत्त, गोलाकृति।

अभ्यास

I. एक वाक्य में उत्तर लिखिए :

1. सिंगफो आदिवासी कहाँ रहते थे?
2. सबसे पहले आदमी को मकान बनाना किसने सिखाया?
3. मकान के बारे में पूछ-ताछ करने दोनों दोस्त कहाँ चल पड़े?
4. दोस्तों की मुलाकात सबसे पहले किससे हुई?
5. दोस्तों ने क्या-क्या तय किया?
6. हाथी से उत्तर पाकर दोस्त किससे मिले?
7. सब जानवरों की बातें सुनकर दोस्तों ने क्या किया?

II. दो-तीन वाक्यों में उत्तर लिखिए :

1. लालिम और किंचा लालीदाम जंगल की ओर क्यों चल पड़े?
2. दोस्तों ने हाथी के साथ किसकी चर्चा की?
3. हाथी ने दोस्तों को क्या उत्तर दिया?
4. दोस्तों ने किन-किन जानवरों से मुलाकात की?

III. तीन-चार वाक्यों में उत्तर लिखिए :

1. साँप ने दोस्तों को क्या सुझाव दिया?
2. भैंस के पंजर से दोस्तों को क्या जानकारी मिली?
3. मछली ने दोस्तों के प्रश्न का क्या जवाब दिया?

IV. अनुरूपता:

1. हाथी : जंगली जानवर :: भैंस : _____
2. मछली : पानी :: साँप : _____
3. मछली : तैरना :: साँप : _____
4. हाथी : सूँड़ :: भैंस : _____

V. अन्य वचन रूप लिखिए:

- | | |
|------------------|------------------|
| 1. कहानी - _____ | 6. मछली - _____ |
| 2. गुफा - _____ | 7. लकड़ी - _____ |
| 3. पेड़ - _____ | 8. पट्टी - _____ |
| 4. पत्ती - _____ | 9. लोग - _____ |
| 5. हड्डी - _____ | 10. घर - _____ |

VI. अन्य लिंग रूप लिखिए:

- | | |
|-----------------|----------------|
| 1. आदमी - _____ | 4. शेर - _____ |
| 2. हाथी - _____ | 5. मोर - _____ |
| 3. भैंस - _____ | 6. बहन - _____ |

VII. विलोम शब्द लिखिए :

- | | |
|--------------------|-------------------|
| 1. बहुत × _____ | 6. मजबूत × _____ |
| 2. दिन × _____ | 7. लंबी × _____ |
| 3. नीचे × _____ | 8. पास × _____ |
| 4. मुश्किल × _____ | 9. दोस्त × _____ |
| 5. आगे × _____ | 10. काटना × _____ |

VIII. जोड़कर लिखिए:

- | अ | आ |
|-----------|----------|
| 1. तालाब | पैर |
| 2. हाथी | मछली |
| 3. भैंस | आदिवासी |
| 4. पहला | हड्डियाँ |
| 5. सिंगफो | मकान |

IX. रिक्त स्थान भरिए:

1. भैंस ने दोस्तों को अपने भैंसे का _____ दिखाया।
2. दोस्तों की मुलाकत अंत में _____ से हुई।
3. आप लोग ज़रा मेरी पीठ की _____ ध्यान से देख लो।
4. भैंस बहन, हम लोग _____ बनाना चाहते हैं।

X. पर्यायवाची शब्द लिखिए:

1. मकान 2. पेड़ 3. दोस्त 4. भेंट

XI. प्रथम प्रेरणार्थक क्रिया रूप लिखिए:

1. बनना - 4. सीखना -
2. गिरना - 5. करना -
3. लगना - 6. ठहरना -

XII. सही शब्द चुनकर लिखिए :

(पानी, पालतू जानवर, गाँव, आसमान, बिल, पेड़, जंगल)

1. हाथी _____ 3. भैंस _____
2. साँप _____ 4. मछली _____
5. पक्षी _____ 6. बैलगाड़ी _____

XIII. कन्नड या अंग्रेज़ी में अनुवाद कीजिए:

1. भैंस ने दोस्तों को पंजर दिखाया।
2. साँप ने कहा, 'आगे की बात मैं नहीं जानता।'
3. हाथी बोला, 'इसमें क्या कठिनाई है?'
4. तालाब में एक बहुत बड़ी मछली तैर रही थी।

पाठ से आगे -

I. पालतू और जंगली जानवरों की सूची तैयार कीजिए:

	पालतू जानवर		जंगली जानवर
1.		1.	
2.		2.	
3.		3.	
4.		4.	
5.		5.	
6.		6.	
7.		7.	
8.		8.	

II. नीचे लिखे शब्दों के आधार पर लिखिए कि कौन क्या काम करता है?

-

उदा :	बढ़ई	लकड़ी का काम
1.	कुम्हार	
2.	लुहार	
3.	सुनार	
4.	जुलाहा	
5.	दूकानदार	
6.	हलवाई	
7.	डॉक्टर	
8.	अध्यापक	
9.	सैनिक	
10.	किसान	



11. समय की पहचान



- सियारामशरण गुप्त

समय बहुत अनमोल है। उसका महत्व धन से भी ज्यादा है। इस कविता द्वारा छात्र समय की महत्ता समझेंगे।

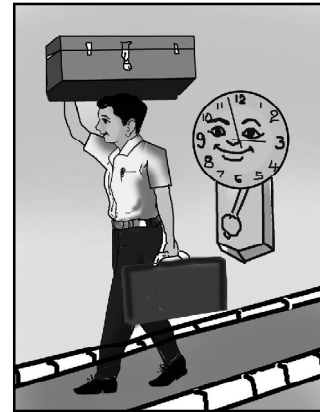
उद्योगी को कहाँ नहीं सुसमय मिल जाता,
समय नष्ट कर कहीं सौख्य कोई भी पाता।

आलस ही यह करा रहा है सभी बहाने,
जो करना है, करो अभी, कल हो क्या जाने?
पा सकते फिर नहीं कभी तुम इसको खोके
चाहो तुम क्यों नहीं चक्रवर्ती भी होके।

कर सकता कब कौन द्रव्य है इसकी समता,
फिर भी तुमको नहीं ज़रा है इसकी चिंता॥
समय ईश का दिया हुआ अति अनुपम धन है,
यही समय ही अहो तुम्हारा शुभ जीवन है।

तुच्छ कभी तुम नहीं एक पल को भी जानो,
पल-पल से ही बना हुआ जीवन को मानो॥
करना है जो काम, उसी में चित्त लगा दो,
आत्मा पर विश्वास करो, संदेह भगा दो॥

ऐसा सुसमय भला और कब तुम पाओगे,
खोकर पीछे इसे सर्वथा पछताओगे॥



पाठ का आशय :

‘समय’ अधिक महत्वपूर्ण तथा उपयोगी होता है। समय को जो अपना सच्चा साथी बना लेगा, वह अपने काम में सफल होगा। इस कविता में यह संदेश दिया गया है कि हमें काम करने का जो अवसर प्राप्त होता है, उसे व्यर्थ जाने नहीं देना चाहिए।

कवि परिचय:

कवि सियारामशरण गुप्त का जन्म 4 सितंबर 1895 को मध्यप्रदेश के झाँसी के चिरगाँव में हुआ था। पिता का नाम सेठ रामचरण कनकने और माता का नाम कौशल्या बाई था। ये हिंदी के राष्ट्रकवि मैथिलीशरण गुप्त के अनुज थे। प्रारंभिक शिक्षा के बाद घर पर ही उन्होंने गुजराती, अंग्रेज़ी तथा उर्दू भाषा सीखी। 1929 में महत्मा गांधीजी के संपर्क में आकर वर्धा में रहे। उनकी प्रमुख रचनाएँ हैं- मौर्यविजय, अनाथ, विषाद, आर्द्रा, आत्मोत्सर्ग, मृण्मयी, बापू, नकुल आदि। दीर्घकालीन साहित्य सेवा के लिए उन्हें नागरी प्रचारिणी सभा, वाराणसी द्वारा ‘सुधाकर पदक’ प्रदान किया गया। लंबे समय की बीमारी के कारण 29 मार्च 1963 में इनका निधन हुआ।



शब्दार्थ :

उद्योगी - परिश्रमी, मेहनती; सौख्य-सुख , आलस - आलस्य, कामचोरी ;
बहाना - बात टालना, नाम मात्र का कारण ; द्रव्य-धन, पदार्थ, सामग्री;
अनुपम - अनोखा, बेजोड़, उपमाविहीन ; तुच्छ-छोटा, क्षुद्र, निस्सार, अल्प;
पल-क्षण, चित्त-मन, ध्यान, अंतःकरण ; विश्वास-भरोसा, यकीन; सुसमय -
अच्छा समय, उत्तम अवसर; खोना - गँवाना, सर्वथा - सदा, हमेशा।

अभ्यास

I. एक वाक्य में उत्तर लिखिए :

1. कवि के अनुसार मनुष्य को सुख कब नहीं मिलता?
2. बहाने बनाने का प्रमुख कारण क्या है?
3. समय किसका दिया हुआ अनुपम धन है?
4. कवि किस पर विश्वास करने को कहते हैं?
5. समय के खोने से क्या होता है?

II. दो-तीन वाक्यों में उत्तर लिखिए :

1. मनुष्य के लिए सुख की प्राप्ति कब संभव है?
2. समय का सदुपयोग कैसे करना चाहिए?
3. कविता की अंतिम चार पंक्तियों में कवि क्या कहना चाहते हैं?

III. निम्नलिखित शब्दों में से सही शब्द चुनकर रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए :

(सर्वथा, चक्रवर्ती, करो अभी, शुभ)

1. जो करना है, _____, कल हो क्या जाने?
2. चाहो तुम क्यों नहीं _____ भी होके।
3. यही समय ही अहो तुम्हारा _____ जीवन है।
4. खोकर पीछे इसे _____ पछताओगे।

IV. अनुरूपता :

1. आलस : परिश्रम :: नष्ट : _____
2. जानो : मानो :: लगा दो : _____
3. धन : निर्धन :: दिया : _____
4. जीवन : मरण :: खोना : _____

V. जोड़कर लिखिए :

- | | |
|------------|----------|
| 1. उद्योगी | सुख |
| 2. आलस | अनुपम धन |
| 3. जीवन | समता |
| 4. समय | बहाना |
| 5. द्रव्य | पल-पल |
| | सुसमय |

VI. उदाहरण के अनुसार तुकांत शब्दों को पहचानकर लिखिए :

उदा : जाता - पाता

- | | | |
|-----------|---|-------|
| 1. बहाने | - | _____ |
| 2. समता | - | _____ |
| 3. धन | - | _____ |
| 4. लगा दो | - | _____ |
| 5. जानो | - | _____ |
| 6. पाओगे | - | _____ |

VII. नीचे दिये गए शब्दों का शुद्ध रूप लिखिए :

- | | | |
|------------|---|-------|
| 1. चकरवरती | - | _____ |
| 2. चींता | - | _____ |
| 3. नश्ट | - | _____ |
| 4. अलास | - | _____ |

5. सरवथा - _____

6. सयम - _____

VIII. उदाहरण के अनुसार शब्द लिखिए:

उदा : समय - सुसमय

1. पुत्र - _____

2. फल - _____

3. मन - _____

4. योग्य - _____

5. यश - _____

6. नाद - _____

7. मति - _____

IX. समय के महत्व से संबंधित निम्नलिखित दोहा और कविताओं को पढ़िए और लिखिए। कक्षा में चर्चा कीजिए :

1. काल करै सो आज कर, आज करै सो अब,
पल में परलय होवेगा, बहुरि करेगा कब।

2. उठ जाग मुसाकिर भोर भई,
अब रैन कहाँ जो सोवत है।
जो सोवत है सो खोवत है,
जो जागत है सो पावत है।

3. जो आज करना सो अब कर ले।

4. जब चिड़िया चुग गयी खेत,
तब पछताये क्या होता है।

X. अपने अध्यापक की सहायता से इसे पूर्ण कीजिए :

एक पहर = _____ घंटे

एक दिन = _____ घंटे

एक सप्ताह = _____ दिन

एक पक्ष = _____ दिन

एक मास = _____ दिन

एक साल = _____ दिन

XI. तालिका में महीनों का नाम लिखिए और 30 दिन आनेवाले महीनों में हरा रंग, 31 आनेवाले महीनों में पीला रंग, 28/29 आनेवाले महीने में लाल रंग भरिए :

पाठ से आगे -

‘समय का महत्व’ विषय पर दस वाक्यों का एक निबंध लिखिए।

12. रोबोट



डॉ. प्रदीप मुखोपाध्याय 'आलोक' -

छात्रों को इस पाठ के द्वारा समझाया जाता है कि मशीन कभी भी मनुष्य का स्थान नहीं ले सकता और मनुष्य का महत्व कभी कम नहीं हो सकता।



वर्षों से सक्सेना परिवार में काम कर रहा था साधोराम। अचानक एक दिन चलती बस से गिरकर उसे खतरनाक चोट आ गई। उसे अस्पताल में भर्ती कराना पड़ा। सक्सेना परिवार बड़ा था। बेटे-बेटियों, नाती-पोतों से घर में हमेशा रौनक और चहल-पहल बनी रहती। साधोराम के अस्पताल पहुँच जाने से सभी की तकलीफें बढ़ गईं। धीरे-धीरे सक्सेना से परिवारवालों का यह दुःख नहीं देखा गया। तभी परिवार के मुखिया के नाते उन्होंने कोई फैसला किया। इस फैसले के तहत अगले रोज़ वे 'रोबोटोनिक्स कॉर्पोरेशन' के कार्यालय जा पहुँचे।

वर्ष 2030 के नवंबर का महीना था। दफ्तर अभी खुला ही था। एक रोबोट वैक्यूम क्लीनर से दफ्तर के फर्श को साफ कर रहा था। कंप्यूटरविद् कृत्रिम बुद्धि (आर्टिफिशियल इंटेलीजेंस) का समावेश रोबोट में करने में सफल हो गए थे। कुछ रोबोटों में तो मानवीय संवेदना के गुण पैदा करने में भी कंप्यूटरविदों एवं रोबोटिकी वैज्ञानिकों को सफलता मिली थी।

काउंटर पर बैठे एक रोबोट ने ही धीरज सक्सेना का स्वागत किया, 'जी श्रीमान्! मैं आपके लिए क्या कर सकता हूँ?' जवाब में धीरज सक्सेना बोले, 'मुझे घरेलू कामकाज करने के लिए एक बुद्धिमान रोबोट की ज़रूरत है।' यह सुनकर काउंटर पर बैठा रोबोट बोला, 'लेकिन घरेलू कामकाज के लिए बुद्धिमान रोबोट क्यों? आप साधारण रोबोट से भी काम चला सकते हैं।'

'दरअसल मुझे बुद्धिमान रोबोट चाहिए। मेरे नाती-पोतों का होमवर्क कराने के लिए एवं वर्ड प्रोसेसर पर मेरा काम सँभालने के लिए भी...।'



'ठीक है, जैसी आपकी मर्जी। जब आप ज़्यादा कीमत चुकाकर बुद्धिमान रोबोट की सेवाएँ लेने के लिए तैयार ही हैं तो हमें भला क्या एतराज हो सकता है।'

धीरज सक्सेना को यह रोबोट बहुत ही व्यवहार-कुशल और चालाक लगा। सचमुच ग्राहक की नब्ज़ पकड़ने की कला में वह पारंगत लगता था।

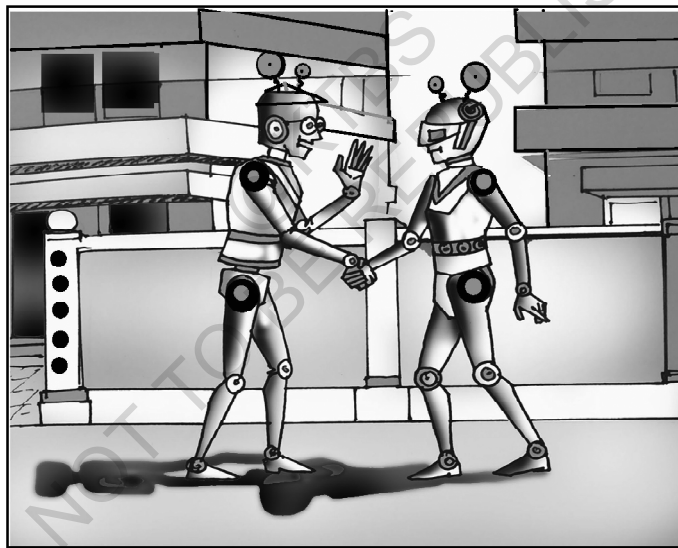
उस दिन दोपहर को ही कंपनी का एक कार्मिक, जो एक रोबोट ही था, सक्सेना परिवार में काम करने के लिए रोबोनिल को छोड़ गया। जिस रोबोट का ऑर्डर धीरज सक्सेना ने दिया था उसीका नाम रोबोनिल था।

रोबोनिल के घर में आ जाने से सभी ने राहत की साँस ली। सुबह नाश्ता कराने, मेहमानों के स्वागत में द्वार खोलने, घर के छोटे बच्चों को कहानियाँ

सुनाने, बच्चों को होमवर्क में मदद करने तथा धीरज सक्सेना के वर्ड प्रोसेसर पर काम करने के अलावा शाम को वह परिवार के पालतू कुत्ते शेरू को घुमाने का काम भी पूरी मुस्तैदी के साथ करने लगा था।

रोबोनिल रोज़ शाम को शेरू को टहलाने के लिए ले जाता था। ऐसे में एक दिन उसकी मुलाकात रोबोदीप से हो गई। रोबोदीप उसी मोहल्ले में रहने वाले शर्मा परिवार के कुत्ते झबरू को घुमाने आया करता था। दोनों रोबोटों के बीच दोस्ती हुई तो शेरू और झबरू भी आपस में हिल-मिल गए।

रोबोनिल की तरह रोबोदीप भी एक बुद्धिमान रोबोट था। बातों-बातों में एक दिन रोबोदीप ने रोबोनिल को बताया, 'जानते हो रोबोनिल, तुम्हारे आने से पहले सक्सेना परिवार में कौन काम करता था?'



रोबोनिल को इस बारे में कुछ पता नहीं था। वह बोला, 'नहीं तो, मुझे इसकी कोई जानकारी नहीं है। पर तुम्हें किसने बताया?'

'मैंने शर्मा परिवार को तुम्हारे सक्सेना परिवार के बारे में बातचीत करते सुना है। साधोराम नाम का सेवक एक बस दुर्घटना में घायल होकर किसी अस्पताल में है।'

‘सो तो ठीक है, पर इसमें खास बात क्या है? ठीक होकर वह दुबारा सक्सेना परिवार से आ जुड़ेगा।’

‘नहीं रोबोनिल! यहीं तुम गलत हो। तुम्हारे परिवार के मुखिया धीरज सक्सेना की शर्मा साहब से मुलाकात हुई थी। उन्होंने बताया कि वह अब साधोराम की छुट्टी करनेवाले हैं।’

सुनकर रोबोनिल चौंक गया। बोला, ‘क्या कहा तुमने! वे लोग साधोराम की छुट्टी करनेवाले हैं! पर क्यों?’

‘इसलिए कि तुम उन्हें बहुत भा गए हो। बूढ़े साधोराम को थोड़ा मुआवज़ा देकर वे उसको गाँव भिजवा देंगे।’

‘मगर रोबोदीप, यह तो रोबोटिकी के नियम के विरुद्ध है। कोई रोबोट किसी इंसान को कैसे नुकसान पहुँचा सकता है! यह तो साधोराम के पेट पर लात मारना हुआ। नहीं, हमें कुछ और करना होगा।’

रोबोनिल की बात सुनकर रोबोदीप बोला, ‘वैज्ञानिक एवं विज्ञान लेखक आइज़क आसिमोव के रोबोटिकी के नियम के खिलाफ तो यह है ही कि कोई रोबोट किसी इंसान के नुकसान का कारण बने, साथ-साथ मानवीय नज़रिये से भी यह गलत है कि हमारे कारण किसी भी इंसान की नौकरी को खतरा पहुँचे।’

दोनों के बीच कुछ गुप्त मंत्रणा हुई। फिर दोनों अपने-अपने पालतू कुत्तों के साथ अपने मालिकों के घर लौट गए।

अगले रोज़ रोबोनिल और रोबोदीप ‘रोबोटोनिक्स कॉरपोरेशन’ के दफ्तर में हाज़िर हुए। कंपनी के मालिक रोबोजीत से उन्होंने भेंट की। सारी बातें विस्तार से समझाईं। सुनकर रोबोजीत बोला, ‘मगर मैं क्या करूँ! मैं तो अनुबंध की शर्तों से बंधा हूँ। व्यापार में अगर मैं नियम को देखने लगूँ तो कर लिया मैंने धंधा। मैं तुम लोगों की कोई मदद नहीं कर सकता।’

रोबोनिल और रोबोदीप ने बहुत समझाने की कोशिश की। रोबोजीत टस से मस नहीं हुआ। उसे आसिमोव के नियमों से बढ़कर धंधे की चिंता थी। निराश होकर दोनों वापस लौट आए।

कुछ दिन और गुज़र गए। सक्सेना परिवार रोबोनिल को पाकर फूला नहीं समा रहा था। पर रोबोनिल साधोराम के कारण बहुत चिंतित था। उसके कारण साधोराम की नौकरी को आँच आए, यह उसे किसी भी सूरत में मंजूर नहीं था। रोबोनिल सोचता कि इंसान अपने स्वार्थ और लालच के तहत नियम और कानूनों को अँगूठा दिखा देता है, पर लगता है, रोबोटों में भी अब वही कमी पैदा हो गई है।

उसी रात रोबोनिल को धीरज सक्सेना ने एक विज्ञान कथा वर्ड प्रोसेसर पर टाइप करने के लिए दी। कथा संक्षेप में इस प्रकार थी- एक घर में नौकर को, जो किसी जानलेवा बीमारी से पीड़ित था, निकालकर उसकी जगह पर एक रोबोट को रख दिया जाता है। किसी तरह रोबोट को इस बात की जानकारी मिल जाती है तो वह 'रोबोटिक संघ' से संपर्क साधकर संघ को सारी बातों से अवगत कराता है। संघ रोबोटों की हड़ताल की घोषणा कर देता है। अंततः समझौता इस बात पर होता है कि उस नौकर को घर में फिर से रख लिया जाएगा।

कहानी टाइप करके रोबोनिल की धात्विक और तारों भरे परिपंथवाली खोपड़ी में यकायक मानो नीली रोशनी हो गई।

अगले रोज़ ही रोबोदीप के साथ वह संघ के कार्यालय जा पहुँचा। सब बातें सुनकर अध्यक्ष ने संघ की कार्यकारिणी की आपातकालीन बैठक बुलाई। बैठक में तय हुआ कि सभी रोबोटिक कंपनियों के काम करनेवाले रोबोटों की हड़ताल का आह्वान कर दिया जाए।

रोबोटिक कंपनियों के मालिकों के बीच इस आह्वान से हलचल मच गई। उन्होंने रोबोजीत पर सक्सेना परिवार के साथ हुए अनुबंध को तुरंत रद्द कर

देने का दबाव डाला। रोबोजीत अकेला पड़ गया। मजबूरन उसे धीरज सक्सेना के साथ अपने अनुबंध को तुरंत रद्द करके रोबोनिल को वापस बुलाने की बात माननी पड़ी।

धीरज सक्सेना को जब यह सब पता चला तो उनके हाथों के तोते उड़ गए। यह सच था कि उन्होंने साधोराम को नौकरी से निकालने का फैसला कर लिया था, पर बदले हुए हालात में उन्हें मजबूर होकर 'रोबोटिक संघ' के अध्यक्ष के पास जाकर यह गुज़ारिश करनी पड़ी कि जब तक साधोराम पूरी तरह से ठीक नहीं हो जाता है, तब तक रोबोनिल उसके पास काम करता रहेगा। साधोराम के ठीक होते ही वह उसे दोबारा काम पर रख लेंगे। संघ को यह बात मानने में कोई आपत्ति नहीं थी।

शाम को रोबोनिल और रोबोदीप मिले। रोबोदीप बोला, 'मुझे खुशी है कि हमारे कारण किसी इंसान को नुकसान नहीं झेलना होगा।'

पाठ का आशय :

सक्सेना परिवार नौकर साधोराम को निकालकर रोबोनिल को नियुक्त करते हैं। रोबोनिल और दूसरे रोबोट रोबोदीप की मुलाकात होने पर उन्हें पता चलता है कि साधोराम की अब छुट्टी कर दी जाएगी। उसकी नौकरी चली जाएगी। रोबोनिल और रोबोदीप अपने संघर्ष के द्वारा धीरज सक्सेना को मजबूर करते हैं कि साधोराम को दोबारा नौकरी पर रखी जाए। अंत में रोबोदीप खुश होता है कि उनसे इंसानों को कोई नुकसान नहीं झेलना होगा।

शब्दार्थ :

खतरनाक - खतरे का, भयजनक; मुखिया - घर का प्रधान , नाते - संबंध से, तहत - अंतर्गत , वैक्यूम क्लीनर - सफाई करने का एक मशीन, समावेश - शामिल करना, एतराज़ - आपत्ति, दोष निकालना; नब्ज़ - नाड़ी, पारंगत-निपुण , कार्मिक - कर्मचारी, मुस्तैदी - तत्परता, मुआवज़ा - हर्ज़ाना, किसी कार्य या हानि के बदले में दिया गया धन; नज़रिया - सोचने का तरीका,

मंत्रणा - विचार-विमर्श, सलाह ; अनुबंध - लिखित समझौता, Contract; सूरत - शक्ति, चेहरा; मंजूर - स्वीकार , संपर्क - मेल, संयोग ; अवगत - जाना हुआ, धात्विक - धातु से बना, धातु संबंधी; परिपंथ-वह जो रास्ता रोके हुए हो, यकायक - अचानक, एकाएक; आपातकालीन - संकट काल का, आह्वान - पुकारना, बुलाना।

अभ्यास

I. एक वाक्य में उत्तर लिखिए :

1. वर्षों से सक्सेना के परिवार में कौन काम कर रहा था?
2. धीरज सक्सेना किस कार्यालय में जा पहुँचे?
3. एक रोबोट वैक्यूम क्लीनर से क्या साफ कर रहा था?
4. रोबोनिल की मुलाकात किससे हुई?
5. शर्मा परिवार के कुत्ते का नाम लिखिए।
6. रोबोनिल और रोबोदीप किससे मिलने गए?
7. वैज्ञानिक लेखक का नाम लिखिए।

II. दो-तीन वाक्यों में उत्तर लिखिए :

1. साधोराम को क्या हुआ था?
2. धीरज सक्सेना को बुद्धिमान रोबोट की ज़रूरत क्यों थी?
3. रोबोदीप ने रोबोनिल से क्या कहा?
4. रोबोनिल ने रोबोजीत को क्या समझाने की कोशिश की?
5. कहानी को टाइप करते समय रोबोनिल को क्या हुआ?

III. पाँच-छः वाक्यों में उत्तर लिखिए :

1. धीरज सक्सेना ने घरेलू कामकाज के लिए रोबोट रखने का निर्णय क्यों लिया?
2. रोबोनिल और रोबोदीप की मुलाकात का वर्णन कीजिए।
3. विज्ञान कथा का सार लिखिए।
4. रोबोटिक कंपनियों के मालिकों के बीच हलचल क्यों मच गई?

IV. निम्नलिखित कारकों को चुनकर लिखिए :

(का, के, में, से, की)

1. वर्ष 2030 _____ नवंबर का महीना था।
2. आप साधारण रोबोट _____ भी काम चला सकते हैं।
3. रोबोनिल _____ घर में आ जाने से सभी ने राहत की साँस ली।
4. रोबोटों _____ हड़ताल की घोषणा हुई ।
5. संघ को यह बात मानने _____ कोई आपत्ति नहीं थी।

V. जोड़कर लिखिए :

अ

ब

- | | |
|------------------------|---------------------------------|
| 1. यह सुनकर काउंटर पर | गुप्त मंत्रणा हुई। |
| 2. मगर, रोबोदीप, यह तो | पाकर फूला नहीं समा रहा था। |
| 3. शाम को रोबोनिल | बैठा रोबोट बोला। |
| 4. दोनों के बीच कुछ | रोबोटिकी के नियम के विरुद्ध है। |
| 5. सक्सेना परिवार | और रोबोदीप मिले। |
| रोबोनिल को | |

VI. अन्य वचन रूप लिखिए :

- | | |
|-------------------|---------------------|
| 1. बेटा - _____ | 5. बेटियाँ - _____ |
| 2. नाती - _____ | 6. पोता - _____ |
| 3. कुत्ता - _____ | 7. कंपनियाँ - _____ |
| 4. छुट्टी - _____ | 8. नौकरियाँ - _____ |

VII. अनुरूपता :

1. शेरू को टहलाना : रोबोनिल :: झबरू को घुमाना : _____
2. मुखिया : धीरज सक्सेना :: सेवक : _____
3. टस से मस न होना : अटल रहना :: फूले न समाना : _____

भाषा ज्ञान

मुहावरे:

जो वाक्यांश अपने सामान्य अर्थ को छोड़कर किसी विशेष अर्थ को प्रकट करता है, वह मुहावरा कहलाता है।

उदाहरण : आँखें चुराना - अपने आप को छिपाना
आँखें दिखाना - धमकाना, डराना, गुस्सा करना
अक्ल का अंधा - मूर्ख
आस्तीन का साँप - कपटी मित्र
कान भरना - चुगली करना

I. उदाहरण के अनुसार मुहावरे लिखिए:

1. शरीर के अंगों से संबंधित - उदा: अँगूठा दिखाना - साफ इनकार करना

2. अंकों से संबंधित - उदा: नौ दो ग्यारह होना - भाग जाना

II. मुहावरों का अर्थ लिखकर वाक्यों में प्रयोग कीजिए :

1. आँख खुलना -
2. ईद का चाँद होना -
3. कान खड़े होना -
4. हवा से बातें करना -
5. बात का धनी -

III. मुहावरों को सही अर्थ के साथ जोड़कर लिखिए :

- | | |
|------------------------|--------------------------------|
| 1. राहत की साँस लेना | - विचलित न होना |
| 2. पेट पर लात मारना | - चैन की साँस लेना/तसल्ली करना |
| 3. टस से मस न होना | - आश्चर्यचकित होना |
| 4. फूला नहीं समाना | - नौकरी या सहूलियत छीनना |
| 5. आँच आना | - वक्त आने पर इनकार करना |
| 6. अँगूठा दिखा देना | - हानि पहुँचना |
| 7. हलचल मचाना | - बहुत खुश होना |
| 8. हाथों के तोते उड़ना | - शोर मचाना |

IV. निम्नलिखित मुहावरों से वाक्य पूरा कीजिए :

(साँस रोके हुए, नौ दो ग्यारह हो जाना, गुस्सा हवा हो जाना, चिंगारियाँ सुलगना, दाँतों तले उँगली दबाना, भूचाल आ जाना)

1. मास्टर साहब की आँखों में _____ रही थीं।
2. मालिक को देखकर ड्राइवर का _____ हो गया।
3. अपने सामने शेर को देख मैं काफी देर तक _____ खड़ा रहा।
4. अध्यापिका की अनुपस्थिति में बच्चों ने कक्षा में इतना शोर मचा रखा था, ऐसा लग रहा था, मानो कक्षा में _____ हो।
5. एक व्यक्ति को अपने मुँह से ट्रक खींचते देख हम _____ दबाकर रह गए।
6. बिल्ली को सामने से आता देख चूहा _____ हो गया।

पाठ से आगे -

रोबोट एक मशीन है, पर उसमें मानवता का भाव भरा हुआ है। मानव भी इस प्रकार की मानवता का भाव कहाँ और कैसे प्रकट कर सकता है - इसके बारे में चर्चा कीजिए।

13. महिला की साहसगाथा



-संकलित

इस लेख द्वारा छात्र यह जानकारी प्राप्त कर सकते हैं कि महिलाएँ भी साहस प्रदर्शन में पुरुषों से कुछ कम नहीं हैं। बचेन्द्री पाल इस विचार का एक निदर्शन है। ऐसी महिलाओं से प्रेरणा पाकर छात्र साहसी भाव अपना सकते हैं।

पहली महिला एवरेस्ट विजेता बचेन्द्री पाल को एवरेस्ट की चोटी पर चढ़नेवाली पहली भारतीय महिला होने का गौरव प्राप्त है। बचेन्द्री का जन्म एक साधारण भारतीय परिवार में हुआ था। पिता किशनपाल सिंह और माँ हंसादेई नेगी की पाँच संतानों में यह तीसरी संतान हैं। बचेन्द्री के बड़े भाई को पहाड़ों पर जाना अच्छा लगता था। भाई को देखकर उन्होंने निश्चय कर लिया कि वे भी वही करेंगी जो उनका भाई करते हैं। वे किसी से पीछे नहीं रहेंगी, उनसे बेहतर करके दिखलाएँगी। इसी जज़्बे से उन्होंने पर्वतारोहण का प्रशिक्षण लेना शुरू कर दिया।



बचेन्द्री को बचपन में रोज़ पाँच किलोमीटर पैदल चल कर स्कूल जाना पड़ता था। बाद में पर्वतारोहण-प्रशिक्षण के दौरान उनका कठोर परिश्रम बहुत काम आया। सिलाई का काम सीख लिया और सिलाई करके पढ़ाई का खर्च जुटाने लगीं। इस तरह उन्होंने संस्कृत में एम.ए तथा बी.एड तक की शिक्षा प्राप्त की।

पढ़ाई के साथ-साथ बचेन्द्री ने पहाड़ पर चढ़ने के अपने लक्ष्य को भी हमेशा अपने सामने रखा। इसी दौरान उन्होंने ने 'कालानाग' पर्वत की चढ़ाई की। सन् 1982 में उन्होंने 'गंगोत्री ग्लेशियर' (6672 मी) तथा 'रूड गेरो' (5819 मी) की चढ़ाई की जिससे उनमें आत्मविश्वास और बढ़ा।

अगस्त 1983 में जब दिल्ली में हिमालय पर्वतारोहियों का सम्मेलन हुआ तब वे पहली बार तेनजिंग नोर्गे (एवरेस्ट पर चढ़नेवाले पहले पुरुष) तथा जुंके ताबी (एवरेस्ट पर चढ़नेवाली पहली महिला) से मिलीं। तब उन्होंने संकल्प लिया कि वे भी उनकी तरह एवरेस्ट पर पहुँचेंगी और वह दिन भी आया, जब 23 मई 1984 को एवरेस्ट पहुँचकर भारत का झंडा फहरा दिया। उस समय उनके साथ पर्वतारोही अंग दोरजी भी थे।

भारत की इस महिला द्वारा लिखित यह इतिवृत्तांत बहुत प्रेरणादायक तथा रोचक है। इसमें उन्होंने इस बात का वर्णन किया है कि वे एवरेस्ट के शिखर पर कैसे पहुँची -

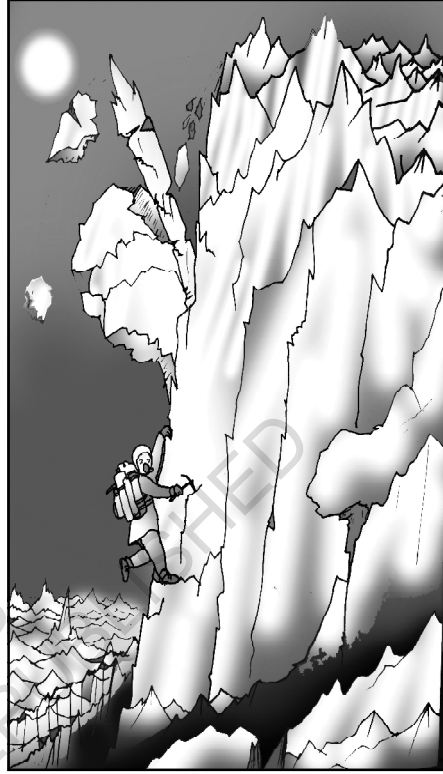
कर्नल खुल्लर ने साउथ कोल तक की चढ़ाई के लिए तीन शिखर दलों के दो समूह बना दिए। मैं सुबह चार बजे उठ गई, बर्फ पिघलाई और चाय बनाई। कुछ बिस्कुट और आधी चॉकलेट का हल्का नाश्ता करने के पश्चात् मैं लगभग साढ़े पाँच बजे अपने तंबू से निकल पड़ी। अंग दोरजी ने मुझसे पूछा क्या मैं उनके साथ चलना चाहूँगी। मुझे उन पर विश्वास था। साथ ही साथ मैं अपनी आरोहण क्षमता और कर्मठता के बारे में भी आश्वस्त थी।

सुबह 6.20 पर जब अंग दोरजी और मैं साउथ कोल से बाहर निकले तो दिन ऊपर चढ़ आया था। हल्की-हल्की हवा चल रही थी और ठंड बहुत अधिक थी। हमने बगैर रस्सी के ही चढ़ाई की। अंग दोरजी एक निश्चित गति से ऊपर चढ़ते गए। मुझे भी उनके साथ चलने में कोई कठिनाई नहीं हुई। जमी हुई बर्फ की सीधी व ढलाऊ चट्टानें इतनी सख्त और भुरभुरी थीं, मानो शीशे की चादर बिछी हो। हमें बर्फ काटने के लिए फावड़े का इस्तेमाल करना पड़ा।

दो घंटे से कम समय में ही हम शिखर कैम्प पर पहुँच गए। अंग दोरजी ने पीछे मुड़कर पूछा, “क्या तुम थक गई हो?” मैंने जवाब दिया, “नहीं” यह सुनकर वे बहुत अधिक आश्चर्यचकित और आनंदित हुए। थोड़ी चाय पीने के बाद हमने पुनः चढ़ाई शुरू कर दी। ल्हाटू एक नायलॉन की रस्सी लाया था इसलिए अंग दोरजी और मैं रस्सी के सहारे चढ़े, जबकि ल्हाटू एक हाथ से रस्सी पकड़े हुए बीच में चला। तभी ल्हाटू ने गौर किया कि मैं इन ऊँचाईयों के लिए आवश्यक चार लीटर ऑक्सीजन की अपेक्षा लगभग ढाई लीटर

ऑक्सीजन प्रति मिनट की दर से लेकर चढ़ रही थी। मेरे रेगुलेटर पर जैसे ही उसने ऑक्सीजन की आपूर्ति बढ़ाई मुझे कठिन चढ़ाई आसान लगने लगी।

दक्षिणी शिखर के ऊपर हवा की गति बढ़ गई थी। उस ऊँचाई पर तेज़ हवा के झोंके भुरभुरे बर्फ के कणों को चारों तरफ उड़ा रहे थे जिससे कुछ दिखाई नहीं दे रहा था। मैंने देखा कि थोड़ी दूर तक कोई ऊँची चढ़ाई नहीं है। ढलान एकदम सीधी नीची चली गई है। मेरी साँस मानो एकदम रुक गई थी। मुझे लगा कि सफलता बहुत नज़दीक है। 23 मई, 1984 के दिन दोपहर के 1 बजकर 7 मिनट पर मैं एवरेस्ट की चोटी पर खड़ी थी। एवरेस्ट की चोटी पर पहुँचनेवाली मैं प्रथम भारतीय महिला थी।



एवरेस्ट की चोटी पर इतनी जगह नहीं थी कि दो व्यक्ति साथ-साथ खड़े हो सकें। चारों तरफ हज़ारों मीटर लंबी सीधी ढलान को देखते हुए हमारे सामने मुख्य प्रश्न सुरक्षा का था। हमने फावड़े से पहले बर्फ की खुदाई कर अपने आपको सुरक्षित रूप से स्थिर किया। इसके बाद मैं अपने घुटनों के बल बैठी। बर्फ पर अपने माथे को लगाकर मैंने सागरमाथे के ताज का चुंबन किया। बिना उठे ही मैंने अपने थैले से हनुमान चालीसा और दुर्गा माँ का चित्र निकाला। मैंने इन्हें अपने साथ लाए लाल कपड़े में लपेटा और छोटी-सी पूजा करके इनको बर्फ में दबा दिया। उठकर मैं अपने रज्जु नेता अंग दोरजी के प्रति आदर भाव से झुकी। उन्होंने मुझे गले लगाया। कुछ देर बाद सोनम पुलजर पहुँचे और उन्होंने फोटो लिए।

इस समय तक ल्हाटू ने हमारे नेता को एवरेस्ट पर पहुँचने की सूचना दे दी थी। तब मेरे हाथ में वॉकी-टॉकी दिया गया। कर्नल खुल्लर ने मुझे बधाई दी और बोले, “देश को तुम पर गर्व है।” हमने शिखर पर 43 मिनट व्यतीत किए और अपनी वापसी यात्रा 1 बजकर 55 मिनट पर आरंभ की। अंग दोरजी और मैं साउथ कोल पर सायं पाँच बजे तक पहुँच गए। सबने साउथ कोल से शिखर तक और वापस साउथ कोल तक की यात्रा (चोटी पर रुकने सहित) पूरे 10 घंटे 40 मिनट के अंदर पूरी करने पर बधाई दी। मैं जब तंबू में घुस रही थी, मैंने मेजर कुमार को कर्नल खुल्लर से वायरलैस पर बात करते सुना, “आप विश्वास करें या न करें श्रीमान, बचेन्द्री पाल केवल तीन घंटे में ही वापिस आ गई है और वह उतनी ही चुस्त दिख रही है जितनी वह आज सुबह चढ़ाई शुरू करने से पहले थी।”

मुझे पर्वतारोहण में श्रेष्ठता के लिए भारतीय पर्वतारोहण संघ का प्रतिष्ठित स्वर्ण-पदक तथा अन्य अनेक सम्मान और पुरस्कार प्रदान किए गए। पद्मश्री और प्रतिष्ठित अर्जुन पुरस्कार की घोषणा की गई। सबके आकर्षण और सम्मान का केंद्र होना मुझे बहुत अच्छा लगा।

इस तरह बचेन्द्री को एवरेस्ट पर पहुँचनेवाली पहली भारतीय महिला होने का गौरव प्राप्त हुआ।

(बचेन्द्री पाल द्वारा लिखित ‘एवरेस्ट-मेरी शिखर यात्रा’ पर आधारित)

पाठ का आशय :

इस पाठ से बच्चे साहस गुण, दृढ़ निश्चय, अथक परिश्रम, मुसीबतों का सामना करना इत्यादि आदर्श गुण सीखते हैं। इसके साथ हिमालय की ऊँची चोटियों की जानकारी भी प्राप्त करते हैं। यह पाठ सिद्ध करता है कि ‘मेहनत का फल अच्छा होता है।’

शब्दार्थ :

चोटी - शिखर, जज़्बा - हौसला, दौरान - उस समय, झंडा - पताका, ध्वज; तंबू - शामियाना, आरोहण - चढ़ना, कर्मठता - काम करने की शक्ति का भाव, बगैर - बिना, फावड़ा - खुदाई का साधन, इस्तेमाल - उपयोग, नज़दीक - पास, रज्जु - रस्सी।

अभ्यास

I. एक वाक्य में उत्तर लिखिए :

1. बचेन्द्री पाल को कौन-सा गौरव प्राप्त हुआ है?
2. बचेन्द्री के माता-पिता कौन थे?
3. बचेन्द्री ने क्या निश्चय किया?
4. बचेन्द्री ने किस ग्लेशियर पर चढ़ाई की?
5. सन् 1983 में दिल्ली में कौन-सा सम्मेलन हुआ था?
6. एवरेस्ट पर भारत का झंडा फहराते समय पाल के साथ कौन थे?
7. कर्नल का नाम क्या था?
8. ल्हाटू कौन-सी रस्सी लाया था?
9. बचेन्द्री ने थैले से कौन-सा चित्र निकाला?
10. कर्नल ने बधाई देते हुए बचेन्द्री से क्या कहा?
11. मेजर का नाम क्या था?
12. बचेन्द्री को भारतीय पर्वतारोहण संघ ने कौन-सा पदक देकर सम्मान किया?

II. दो-तीन वाक्यों में उत्तर लिखिए :

1. बचेन्द्री पाल के परिवार का परिचय दीजिए।
2. बचेन्द्री का बचपन कैसे बीता?
3. बचेन्द्री ने पर्वतारोहण के लिए किन-किन चीज़ों का उपयोग किया?
4. एवरेस्ट की चोटी पर पहुँचकर बचेन्द्री ने क्या किया?

III. चार-पाँच वाक्यों में उत्तर लिखिए :

1. बचेन्द्री ने पहाड़ पर चढ़ने की तैयारी किस प्रकार की?
2. दक्षिणी शिखर पर चढ़ते समय बचेन्द्री के अनुभव के बारे में लिखिए।
3. प्रस्तुत पाठ से क्या संदेश मिलता है?

IV. जोड़कर लिखिए :

अ	ब
1. गंगोत्री ग्लेशियर की चढ़ाई	सन् 1984
2. पर्वतारोहियों का सम्मेलन	सन् 1985
3. एवरेस्ट की चोटी पर पहुँचना	सन् 1982
	सन् 1983

V. अनुरूप शब्द लिखिए :

1. पहाड़ : गिरि :: चोटी : _____
2. कालानाग : पर्वत :: गंगोत्री : _____
3. कर्नल : खुल्लर :: मेजर : _____
4. चाय : गरम :: बर्फ : _____
5. पहले हिमालय पर्वतारोही पुरुष : तेनजिंग नोर्गे :: पहली एवरेस्ट पर्वतारोही महिला : _____

VI. स्त्रीलिंग शब्द लिखिए :

पुल्लिंग	स्त्रीलिंग
1. बाप	- _____
2. पुरुष	- _____
3. भाई	- _____
4. बेटा	- _____
5. श्रीमान	- _____

VII. उदाहरण के अनुसार लिखिए :

1. पढ़ + आई = पढ़ाई
2. चढ़ + आई = _____
3. कठिन + आई = _____
4. ऊँचा + आई = _____
5. बड़ + आई = _____

VIII. अन्य वचन लिखिए :

1. चट्टान - _____
2. रस्सी - _____
3. शीशा - _____
4. चोटी - _____
5. चादर - _____

IX. विलोम शब्द लिखिए :

1. आरोहण x _____
2. चढ़ना x _____
3. ठंडा x _____
4. परिश्रम x _____
5. सामने x _____

X. समानार्थक शब्द लिखिए :

उदा: पहाड़ = गिरि पर्वत
चोटी = _____,
सुबह = _____,
महिला = _____,
नज़दीक = _____,

XI. निम्न शब्दों में विशेषण तथा संज्ञा शब्दों को अलग-अलग कीजिए :

शब्द	संज्ञा	विशेषण
उदा: ऊँचा पर्वत	- पर्वत	ऊँचा
1. मधुर स्वर	- _____,	_____
2. कर्कश आवाज़	- _____,	_____
3. बड़ा साधु	- _____,	_____
4. ठंडी हवा	- _____,	_____
5. नायलॉन रस्सी	- _____,	_____

XII. अनेक शब्द के लिए एक शब्द दिये गये हैं, ढूँढ़कर लिखिए :

उदा : जो पढ़ा लिखा न हो - अनपढ़

1. जहाँ पहुँचा न जा सके - _____
2. मास में एक बार आनेवाला - _____
3. जो कभी न मरे - _____
4. अच्छे चरित्रवाला - _____
5. जो आँखों के सामने हो - _____
6. जो स्थिर रहे - _____
7. जिसे क्षमा न किया जा सके - _____
8. जो वन में घूमता हो - _____
9. जिसका संबंध पश्चिम से हो - _____
10. जो उपकार मानता हो - _____

मासिक
सच्चरित्र
अक्षम्य
अमर
वनचर
पाश्चात्य
प्रत्यक्ष
स्थायी
दुर्गम
कृतज्ञ

XIII. कन्नड या अंग्रेज़ी में अनुवाद कीजिए :

1. बचेन्द्री का जन्म एक साधारण परिवार में हुआ था।
2. बचेन्द्री को रोज़ पैदल चलकर स्कूल जाना पड़ता था।
3. दक्षिणी शिखर के ऊपर हवा की गति बढ़ गई थी।
4. मुझे लगा कि सफलता बहुत नज़दीक है।
5. मैं एवरेस्ट की चोटी पर पहुँचनेवाली प्रथम भारतीय महिला थी।

परियोजना : साहसी महिलाओं के नाम तथा क्षेत्र की सूची बनाइए।

पाठ से आगे -

अपने किसी दोस्त की अथवा अपनी ही कोई साहस गाथा कक्षा में सुनाइए।

14. सूर-श्याम



सूरदास -

प्रस्तुत पद में कवि सूरदास ने कृष्ण की बाल-लीला का वर्णन करते हुए उसके स्वभाव, भोलेपन एवं माता यशोदा के वात्सल्य का सुंदर चित्रण किया है।



मैया मोहिं दाऊ बहुत खिझायो ।
मोसों कहत मोल को लीनो, तोहि जसुमति कब जायो ॥
कहा कहौं इहि रिस के मारे, खेलन हौं नहिं जात ।
पुनि पुनि कहत कौन है माता, को है तुमरो तात ॥
गोरे नंद जसोदा गोरी, तुम कत स्याम सरीर ।
चुटकी दै दै हंसत ग्वाल, सब सिखै देत बलबीर ॥
तू मोहिं को मारन सीखी, दाउहि कबहुं न खीझै ।
मोहन को मुख रिस समेत लखि, जसुमति सुनि सुनि रीझै ॥
सुनहु कान्ह बलभद्र चबाई, जनमत ही को धूत ।
'सूर' स्याम मोहिं गोधन की सौं, हौं माता तू पूत ॥

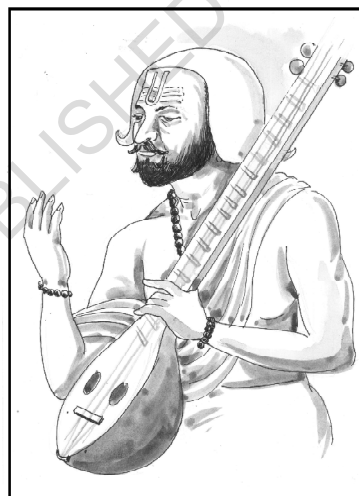
पद का आशय :

बच्चे स्वभाव से भोले होते हैं। वे हमेशा अपने माता-पिता से अपने भाई, बहन और मित्रों की कुछ-न-कुछ शिकायत करते रहते हैं। उनका बाल सहज स्वभाव देखकर बड़ों को हँसी आती है और उन्हें पुचकारकर सांत्वना देते हैं। माँ और बेटे के ऐसे सहज संबंध की कल्पना कर सूरदास जी ने अपने इस पद में उसका मार्मिक चित्रण किया है।

कवि परिचय :

सूरदास (सन् 1540-1642)

भक्त कवि सूरदास हिंदी साहित्याकाश के सूर्य माने जाते हैं। इन्हें भक्तिकाल की सगुण भक्तिधारा की कृष्णभक्ति-शाखा के प्रवर्तक माना जाता है। इनका जन्म उत्तर प्रदेश के रुकता गाँव में सन् 1540 को हुआ था। इनकी प्रमुख रचनाएँ हैं- 'सूर सागर', 'सूर सारावली' एवं 'साहित्यलहरी'। इनकी मृत्यु सन् 1642 को हुई। इनके काव्यों में वात्सल्य, श्रृंगार तथा भक्ति का त्रिवेणी संगम हुआ है।



शब्दार्थ :

मैया-माँ, मोहिं-मुझे, दाऊ-भैया (बलराम), खिझाना-चिढ़ाना, मोसों-मुझसे, मोल-मूल्य, दाम; तोहि-तुझे, जसुमति-जसोदा, यशोदा; जायो-जन्म दिया, रिस-क्रोध, के मारे-के कारण, तुमरो-तुम्हारे, तात-पिता, कत-क्यों, स्याम-काला, ग्वाल-गोपालक, सिखै-सिखाना, बलभद्र-बलबीर, बलराम; रीझै-मोहित होना, सुनहु-सुनो, कान्ह-कृष्ण, चबाई-पीठ पीछे बुराई करनेवाला, चुगलखोर; जनमत ही को-जन्म से ही, धूत-दुष्ट, लखि-देखकर, सौं-कसम, सौगंध; हौं-मैं, पूत-पुत्र।

भावार्थ :

प्रस्तुत पंक्तियों में भाई बलराम के प्रति कृष्ण की शिकायत का मोहक वर्णन किया गया है। कृष्ण अपनी माँ यशोदा से शिकायत करता है कि भाई मुझे बहुत चिढ़ाता है। वह मुझसे कहता है कि तुम्हें यशोदा माँ ने जन्म नहीं दिया है बल्कि मोल लिया है। इसी गुस्से के कारण उसके साथ मैं खेलने नहीं जाता। वह मुझसे बार-बार पूछता है कि तुम्हारे माता-पिता कौन हैं? वह यह भी कहता है कि नंद और यशोदा तो गोरे हैं, लेकिन तुम्हारा शरीर क्यों काला है? उसकी ऐसी हँसी-मज़ाक सुनकर मेरे सब ग्वाल मित्र चुटकी बजा-बजाकर हँसते हैं। उन्हें बलराम ने ही ऐसा करना सिखाया है। माँ, तुमने केवल मुझे ही मारना सीखा है और भाई पर कभी गुस्सा नहीं करती। (अपने भाई के प्रति क्रोधित और सखाओं द्वारा अपमानित) कृष्ण के क्रोधयुत मुख को देखकर और उसकी बातों को सुनकर यशोदा खुश हो जाती है। वह कहती है - हे कृष्ण! सुनो । बलराम जन्म से ही चुगलखोर है। मैं गोधन की कसम खाकर कहती हूँ, मैं ही तेरी माता हूँ और तुम मेरे पुत्र हो।

इस पद में सूरदास ने बालकृष्ण के भोलेपन और यशोदा के वात्सल्य का मार्मिक चित्रण किया है।

अभ्यास

I. एक वाक्य में उत्तर लिखिए :

1. सूर-श्याम पद के रचयिता कौन हैं?
2. कृष्ण की शिकायत किसके प्रति है?
3. यशोदा और नंद का रंग कैसा था?
4. चुटकी दे-देकर हँसनेवाले कौन थे?
5. यशोदा किसकी कसम खाती है?
6. बालकृष्ण किससे शिकायत करता है ?
7. बलराम के अनुसार किसे मोल लिया गया है ?
8. बालकृष्ण का रंग कैसा था ?

II. दो-तीन वाक्यों में उत्तर लिखिए :

1. कृष्ण बलराम के साथ खेलने क्यों नहीं जाना चाहता?
2. बलराम कृष्ण के माता-पिता के बारे में क्या कहता है?
3. कृष्ण अपनी माता यशोदा के प्रति क्यों नाराज़ है?
4. बालकृष्ण अपनी माता से क्या-क्या शिकायतें करता है?
5. यशोदा कृष्ण के क्रोध को कैसे शांत करती है?

III. चार-छः वाक्यों में उत्तर लिखिए :

1. पद का भावार्थ अपने शब्दों में लिखिए ।

IV. पद्यभाग पूर्ण कीजिए :

1. गोरे नंद _____ सरीर ।
_____ बलबीर ॥
2. सुनहु कान्ह _____ ।
_____ तू पूत ॥

V. अनुरूपता :

1. बलभद्र : बलराम :: कान्ह : _____
2. जसोदा : माता :: नंद : _____
3. रीझना : मोहित होना :: खिजाना : _____
4. बलबीर : बलराम :: जसोदा : _____

VI. जोड़कर लिखिए :

अ	ब
1. सूरदास का जन्म	कृष्ण भक्ति शाखा
2. सगुण भक्तिधारा की	सन् 1540 को हुआ
3. उत्तर प्रदेश का रुकता	सन् 1642 को हुई
4. सूरदास जी की मृत्यु	सूर का जन्मस्थान

VII. सही शब्द चुनकर लिखिए:

(चुगलखोर, गोरी, श्याम, चुटकी, बाल-लीला)

1. जसोदा _____
2. कृष्ण _____
3. ग्वाल मित्र _____
4. बलराम _____
5. कृष्ण की _____

VIII. आधुनिक रूप लिखिए:

जैसे : मैया - माता

- | | |
|----------------|-----------------|
| 1. मोहिं _____ | 6. जसुमति _____ |
| 2. मोसों _____ | 7. धूत _____ |
| 3. रिस _____ | 8. कान्ह _____ |
| 4. सरीर _____ | 9. पूत _____ |
| 5. सिखै _____ | 10. जनमत _____ |

पद से आगे -

- भक्त कवयित्री मीराबाई का परिचय पाइए और कक्षा में चर्चा कीजिए।
- कन्नड के कवि पुरंदरदास और कनकदास की जानकारी प्राप्त कीजिए।
- चित्र देखकर एक कहानी रचिए और उसके लिए एक उचित शीर्षक दीजिए।



15. कर्नाटक-संपदा



संकलित-

प्रस्तुत निबंध द्वारा छात्र कर्नाटक के अतीत वैभव, वर्तमान प्रौद्योगिकी-विकास तथा प्रकृति-संपदा के साथ-साथ इस राज्य के महान् व्यक्तियों की साधना का परिचय प्राप्त करते हैं।

कर्नाटक राज्य भारत देश का प्रगतिशील राज्य है। यहाँ की आबादी लगभग छः करोड़ से ऊपर है। प्रकृतिमाता ने कर्नाटक राज्य को अपने हाथों से सँवारकर सुंदर और समृद्ध बनाया है। कर्नाटक की प्राकृतिक सुषमा नयन मनोहर है। पश्चिम में विशाल अरबी समुद्र लहराता है। इसी प्रांत में दक्षिण से उत्तर के छोर तक फैली लंबी पर्वतमालाओं को पश्चिमी घाट कहते हैं। इन्हीं घाटों का कुछ भाग सह्याद्रि कहलाता है। दक्षिण में नीलगिरि की पर्वतावलियाँ शोभायमान हैं।

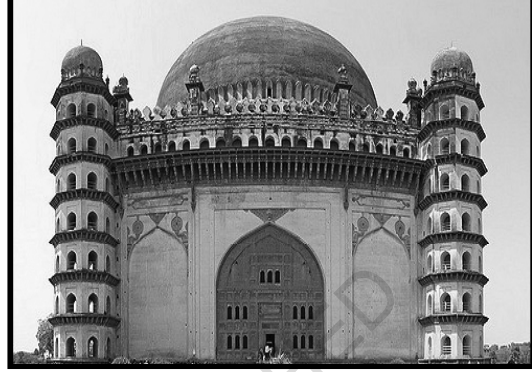
कर्नाटक में कन्नड भाषा बोली जाती है और इसकी राजधानी बेंगलूरु है। यहाँ देश-विदेश के लोग आकर बस गये हैं। बेंगलूरु शिक्षा का ही नहीं, बल्कि बड़े-बड़े उद्योग-धंधों का भी केंद्र है। यहाँ प्रसिद्ध भारतीय विज्ञान संस्थान, एच.ए.एल, एच.एम.टी, आइ.टी.आइ, बी.एच.ई.एल, बी.ई.एल जैसी बृहत् संस्थाएँ हैं। इसे 'सिलिकॉन सिटी' भी कहा जाता है।

सर.सी.वी.रामन, सर.एम.विश्वेश्वरय्या, डॉ.सी.एन.आर.राव, डॉ.शकुंतला देवी जैसे दिग्गजों ने वैज्ञानिक तथा प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में नारायण मूर्ति ने अपनी महत्तर उपलब्धियों से कर्नाटक को विश्व पटल पर अंकित किया है। सन् 2013 में डॉ. सी.एन.आर. राव को सर्वोच्च पुरस्कार 'भारत रत्न' प्राप्त हुआ है।

यहाँ सोना, ताँबा, लोहा आदि कई प्रकार की उपयोगी धातुएँ मिलती हैं। भद्रावती में कागज़, लोहे और इस्पात के बड़े कारखाने हैं। इसके अलावा कर्नाटक में चीनी, सिमेंट, रेशम और कागज़ उत्पादन के अनेक कारखाने हैं।

कर्नाटक में चंदन के पेड़ विपुल मात्रा में हैं। इसलिए कर्नाटक को 'चंदन का आगार' कहते हैं। यहाँ चंदन का तेल, साबुन तथा कलाकृतियाँ भी बनायी जाती हैं।

कर्नाटक में कावेरी, कृष्णा, तुंग-भद्रा आदि अनेक नदियाँ बहती हैं। इन नदियों पर बाँध बनाये गये हैं। इनसे हज़ारों एकड़ ज़मीन सींची जाती है। इसके अलावा इन नदियों के जलाशयों की सहायता से ऊर्जा-उत्पादन केंद्र भी स्थापित किये गये हैं। जोग, अब्बी, गोकाक, शिवनसमुद्र आदि जलप्रपात मनमोहक हैं।



गोलगुंबज़

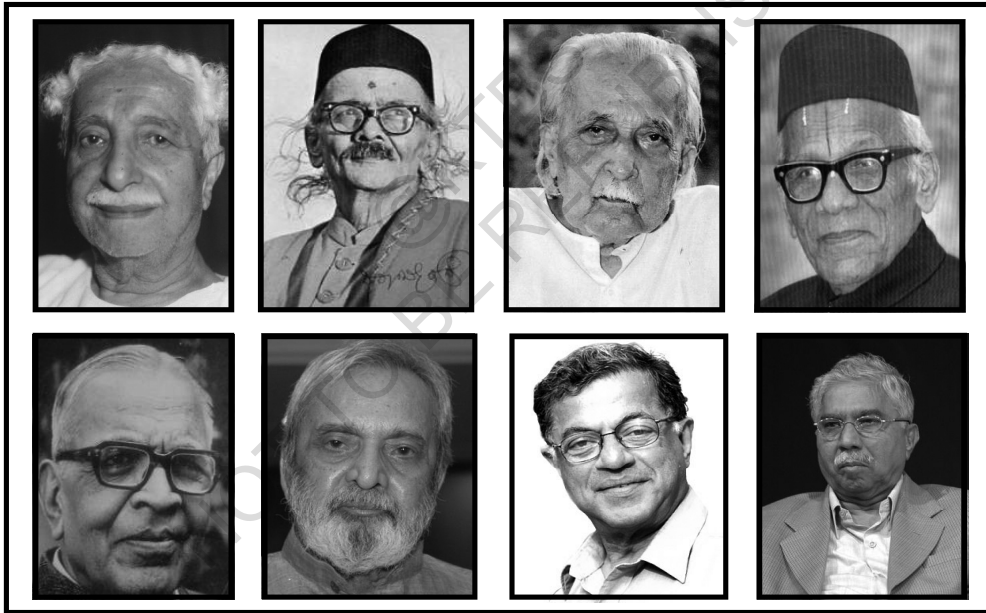
कर्नाटक राज्य की शिल्पकला अनोखी है। बादामी, ऐहोले, पट्टदकल्लु में जो मंदिर हैं, उनकी शिल्पकला और वास्तुकला अद्भुत है। बेलूर, हलेबीडु, सोमनाथपुर के मंदिरों में पत्थर की जो मूर्तियाँ हैं, वे सजीव लगती हैं। ये सुंदर मूर्तियाँ हमें रामायण, महाभारत, पुराणों की कहानियाँ सुनाती हैं। श्रवणबेलगोल में 57 फुट ऊँची गोमटेश्वर की एकशिला प्रतिमा है, जो दुनिया को त्याग और शांति का संदेश दे रही है। विजयपुरा के गोलगुंबज़ की व्हिस्पेरिंग गैलरी वास्तुकला का अद्वितीय दृष्टांत है। मैसूरू का राजमहल कर्नाटक के वैभव का प्रतीक है। प्राचीन सेंट फिलोमिना चर्च, जगनमोहन राजमहल (आर्ट गैलरी) का पुरातत्व वस्तु संग्रहालय अत्यंत आकर्षणीय हैं।



मैसूरू का राजमहल

गंग, कदंब, राष्ट्रकूट, चालुक्य, होय्सल, ओडेयर आदि राजवंशजों ने तथा कृष्णदेवराय, मदकरिनायक, रानी अब्बक्का देवी, किन्नूर चन्नम्मा, टीपू सुल्तान, आदिलशाह जैसे शासकों ने कर्नाटक राज्य की श्रीवृद्धि में अपना महत्वपूर्ण योगदान दिया है।

कर्नाटक के अनेक साहित्यकारों ने सारे संसार में कर्नाटक की कीर्ति फैलायी है। वचनकार बसवण्णा क्रांतिकारी समाज सुधारक थे। अक्कमहादेवी, अल्लमप्रभु, सर्वज्ञ जैसे अनेक संतों ने अपने अनमोल 'वचनों' द्वारा प्रेम, दया और धर्म की सीख दी है। पुरंदरदास, कन्नदास आदि भक्त कवियों ने भक्ति, नीति, सदाचार के गीत गाये हैं। पंपा, रत्ना, पोन्ना, कुमारव्यास, हरिहर, राघवांक आदि ने महान् काव्यों की रचना कर कन्नड साहित्य को समृद्ध बनाया है।



आधुनिक काल के साहित्यकार कुवेम्पु, द.रा. बेंद्रे, शिवराम कारंत, मास्ति वेंकटेश अय्यंगार, वि.कृ. गोकाक, यू.आर. अनंतमूर्ति, गिरीश कार्नाड और चंद्रशेखर कंबार ज्ञानपीठ पुरस्कार से अलंकृत हैं। यह कन्नड भाषा, संस्कृति तथा कर्नाटक के लिए गौरव का विषय है।

पाठ का आशय :

‘जननी जन्म भूमिश्च स्वर्गादपि गरीयसि’। प्रत्येक व्यक्ति का अपनी जन्मभूमि से अनुराग और उस पर अभिमान करना सहज है। कर्नाटक हमारी जन्मभूमि है। यहाँ की प्राकृतिक सुषमा, साहित्यिक वैभव और ज्ञान-विज्ञान क्षेत्र की प्रगति अपार है। देश-विदेश के लोग यहाँ की तकनीकी के विकास की मुक्तकंठ से प्रशंसा करते हैं। इस संदर्भ में प्रस्तुत पाठ अत्यंत प्रासंगिक एवं सार्थक है।

टिप्पणी :

व्हिस्पेरिंग गैलरी

यह विजयपुरा के विश्व विख्यात गोलगुंबज़ में है। इसकी वास्तुकला अनोखी है। इस गुंबज़ के एक छोर से धीमी आवाज़ में बातें करें तो वह विरुद्ध छोर में स्पष्ट सुनाई देती है। इस गुंबज़ की एक और विशेषता यह है कि यहाँ एक बार आवाज़ निकालने से यह सात बार प्रतिध्वनित होती है।

शब्दार्थ :

आबादी - जनसंख्या, सँवारना - सजाना, सुषमा - अत्यधिक सुंदरता, लहराना - तरंगित होना, छोर - किनारा, अंतिम सिरा; घाट - Ghats, चढ़ाव-उतार का पहाड़ी मार्ग; आवली - कतार, पंक्ति; दिग्गज - महान् व्यक्ति, प्रौद्योगिकी - तकनीकी, उपलब्धि - प्राप्ति, सिद्धि; पटल - परदा, धातु - खनिज पदार्थ, इस्पात - फौलाद, Steel ; विपुल - अधिक, आगार - घर, सींचना - भिगोना, पानी देना; ऊर्जा - शक्ति, Energy; वास्तुकला - इमारत-मकान आदि बनाने की कला, प्रतिमा - मूर्ति, अद्वितीय - जिसके समान दूसरा न हो, दृष्टांत - उदाहरण, श्रीवृद्धि - उन्नति, प्रगति; योगदान - सहयोग देना, अनमोल - अमूल्य, बेजोड़।

विस्तृत रूप :

एच.ए.एल	-	हिंदुस्तान एरोनॉटिकल लिमिटेड
एच.एम.टी	-	हिंदुस्तान मशीन टूल्स
आइ.टी.आइ	-	इंडियन टेलीफोन इंडस्ट्रीस
बी.ई.एल	-	भारत इलेक्ट्रॉनिक्स लिमिटेड
बी.एच.ई.एल	-	भारत हेवी इलेक्ट्रिकल्स लिमिटेड

अभ्यास

I. एक वाक्य में उत्तर लिखिए :

1. पश्चिमी घाट किसे कहते हैं?
2. कर्नाटक में कौन-कौन-से जलप्रपात हैं?
3. श्रवणबेलगोला की गोमटेश्वर मूर्ति की ऊँचाई कितनी है?
4. किस नगर को सिलिकॉन सिटी कहा जाता है?
5. भद्रावती के दो प्रमुख कारखानों के नाम लिखिए ।
6. सेंट फिलोमिना चर्च किस नगर में है?
7. विजयपुरा नगर का प्रमुख आकर्षक स्थान कौन-सा है?
8. अरबी समुद्र कर्नाटक की किस दिशा में है?
9. कर्नाटक की दक्षिण दिशा में कौन-सी पर्वतमालाएँ शोभायमान हैं?

II. दो-तीन वाक्यों में उत्तर लिखिए :

1. कर्नाटक की प्रमुख नदियाँ और जलप्रपात कौन-कौन-से हैं?
2. कर्नाटक के किन साहित्यकारों को ज्ञानपीठ पुरस्कार प्राप्त है?
3. बाँध और जलाशयों के क्या उपयोग हैं?
4. कर्नाटक के कुछ प्रमुख राजवंशों के नाम लिखिए ।
5. बेंगलूरु में कौन-कौन-सी बृहत् संस्थाएँ हैं ?

III. चार-पाँच वाक्यों में उत्तर लिखिए :

1. कर्नाटक के प्राकृतिक सौंदर्य का वर्णन कीजिए ।
2. कर्नाटक की शिल्पकला का परिचय दीजिए ।
3. कन्नड भाषा तथा संस्कृति को कर्नाटक के साहित्यकारों की क्या देन है?

IV. कोष्ठक में दिए गए शब्दों में से उचित शब्द चुनकर रिक्त स्थान भरिए :

(गंग, त्याग, पुराण, वैभव, कीर्ति, साबुन, चंदन, शांति)

1. कर्नाटक को _____ का आगार कहते हैं ।
2. गोमटेश्वर की प्रतिमा दुनिया को त्याग और _____ का संदेश दे रही है ।
3. मैसूरु का राजमहल कर्नाटक के _____ का प्रतीक है।
4. कर्नाटक के अनेक साहित्यकारों ने सारे संसार में कर्नाटक की _____ फैलायी है।

V. कन्नड या अंग्रेज़ी में अनुवाद कीजिए :

1. कर्नाटक में कन्नड भाषा बोली जाती है और इसकी राजधानी बेंगलूरु है।
2. कर्नाटक में चंदन के पेड़ विपुल मात्रा में हैं।
3. जगनमोहन राजमहल का पुरातत्व वस्तु संग्रहालय अत्यंत आकर्षणीय है।
4. वचनकार बसवण्णा क्रांतिकारी समाज सुधारक थे।

VI. नमूने के अनुसार इन शब्दों के पर्यायवाची शब्द लिखिए :

उदा :	पर्वत	अद्रि	पहाड़	गिरि
1.	सागर	_____	_____	_____
2.	आगार	_____	_____	_____
3.	जल	_____	_____	_____
4.	आकाश	_____	_____	_____

VII. विलोम शब्द लिखिए :

1. सुंदर × _____
2. विदेश × _____
3. आदि × _____
4. सजीव × _____
5. सदाचार × _____
6. आयात × _____

VIII. उदाहरण के अनुसार बहुवचन रूप बनाना सीखिए :

उदा : संधि - संधियाँ

1. मूर्ति - _____
2. उपलब्धि - _____
3. कृति - _____
4. नीति - _____
5. संस्कृति - _____
6. पद्धति - _____

IX. विच्छेद कर संधि का नाम लिखिए :

- | | |
|--------------|------------|
| 1. दिग्गज | 5. जगनमोहन |
| 2. पर्वतावली | 6. सदाचार |
| 3. संग्रहालय | 7. अत्यंत |
| 4. जलाशय | |

X. विग्रह कीजिए और समास का नाम लिखिए :

1. देश-विदेश
2. जलप्रपात
3. राजवंश
4. राजमहल

XI. परियोजना :

- श्री कृष्णदेवराय, विष्णुवर्धन, इम्मडि पुलिकेशी आदि राजाओं के बारे में चित्र सहित विवरण लिखिए।
- कर्नाटक में बहनेवाली नदियों की सूची तैयार कीजिए। हर एक नदी के बारे में पाँच-पाँच वाक्य लिखिए।

XII. सही विकल्प को रेखांकित कीजिए :

1. तुंग-भद्रा नदी इन राज्यों में बहती है-
अ) कर्नाटक-तमिलनाडु आ) कर्नाटक-महाराष्ट्र
इ) कर्नाटक-आंध्र प्रदेश ई) कर्नाटक-केरल
2. श्रवणबेलगोला की गोमटेश्वर मूर्ति का निर्माण इन्होंने कराया था-
अ) दीवान पूर्णय्या आ) मिर्जा इस्माइल
इ) श्री वीरेंद्र हेगडे ई) चावुंडराया

3. ज्ञानपीठ से पुरस्कृत प्रथम कन्नड साहित्यकार ये हैं -

- अ) चंद्रशेखर कंबार आ) कुर्वेपु
इ) यू. आर. अनंतमूर्ति ई) गिरीश कर्नाड

4. कन्नड भाषा के प्रथम 'राष्ट्रकवि' की उपाधि से अलंकृत साहित्यकार ये हैं -

- अ) गोविंद पै आ) कुर्वेपु
इ) जी.एस. शिवरुद्रप्पा ई) ती.नं.श्री

XIII. अर्थ समझिए और वाक्य में प्रयोग कीजिए :

1. तक - थक
2. चोर - छोर
3. बात - भात
4. काल - खाल

XIV. अनुरूपता :

1. दक्षिण से उत्तर के छोर की पर्वतमाला : पश्चिमी घाट :: दक्षिण की पर्वतावलियाँ : _____
2. कर्नाटक : चंदन का आगार :: बेंगलूरु : _____
3. सी.वी.रामन : नोबेल पुरस्कृत :: सर.एम. विश्वेश्वरय्या : _____
4. भद्रावती : लोहे और इस्पात :: मैसूरु : _____
5. कावेरी : नदी :: जोग : _____

6. बेलूरु : शिल्पकला :: गोलगुंबज़ : _____
7. सेंट फिलोमिना : चर्च :: जगनमोहन राजमहल : _____
8. कृष्णदेवराय : शासक :: राष्ट्रकूट : _____
9. बसवण्णा : वचनकार :: कनकदास : _____
10. पंपा : प्राचीन कवि :: कंबार : _____

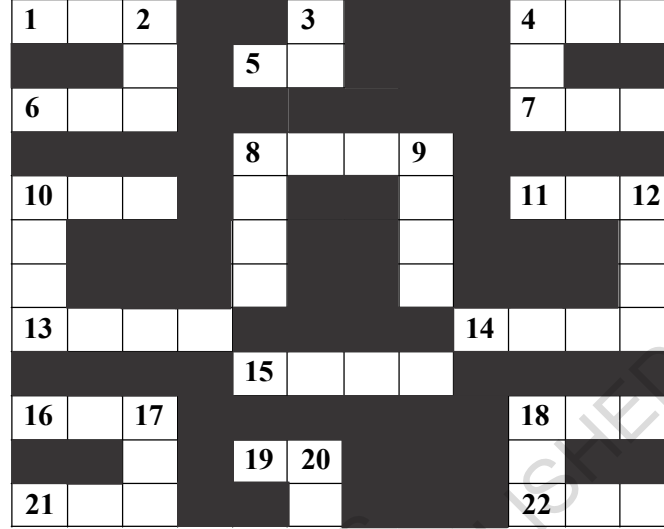
पाठ से आगे

- I. दिए-गए सही कारक चिह्न रिक्त स्थान में भरिए और इस अनुच्छेद के लिए उचित शीर्षक दीजिए :

(ने, को, से, का, की, के, के लिए, में, पर)

कितूर _____ नौ मील दूरी _____ स्थित संगोली नामक एक छोटा-सा गाँव है। इसी गाँव _____ एक गड़रिये परिवार _____ रायण्णा _____ जन्म 15 अगस्त सन् 1793 ई. _____ हुआ था। इनके पिताजी _____ नाम भरमण्णा था। रायण्णा _____ माता _____ नाम चंचोबा था। रायण्णा _____ अपने भाई सिद्धण्णा _____ संग कसरत _____ साथ-साथ शस्त्राभ्यास भी किया। परिश्रम _____ फलस्वरूप कितूर रानी चेन्नम्मा _____ राज्य _____ रायण्णा मुख्य सेनापति _____ पद _____ आरूढ़ हुए। उन्होंने अंग्रेजों _____ देश _____ भगाकर भारतमाता _____ स्वतंत्रता दिलाना ही अपना परम कर्तव्य माना था।

II. वर्ग पहेली :



बाएँ से दाएँ -

1. रायचूरु जिले से विभक्त होकर उदित नया जिला - नाम पलट गया है। (3)
4. सोने का खान यहाँ है । (3)
5. प्रसिद्ध नाटक-अभिनेता वीरणा इस गाँव के थे । (2)
6. इसे कर्नाटक की सांस्कृतिक राजधानी कहा जाता है । (3)
7. बीदर जिला के समीप का जिला केंद्र । (3)
8. तुमकूरु जिले के सिद्धगंगा के साथ इस गाँव का नाम जुड़ा रहता है। (4)
10. यह केलदी संस्थान की राजधानी है । (3)
11. प्रसिद्ध मारिकांबा-मंदिर इस स्थान में है । (3)
13. प्रख्यात तेज़ गेंदबाज श्रीनाथ इस गाँव के हैं - नाम पलट गया है । (4)
14. कर्नाटक की राजधानी । (4)
15. मदकरि नायक ने यहाँ शासन किया था । (4)

16. रानी चेन्नम्मा का गाँव । (3)
18. कर्नाटक में अत्यधिक वर्षा होने का स्थान । यहाँ से सूर्यास्त का दृश्य मनमोहक लगता है - नाम पलट गया है। (3)
19. राजा, रानी, रोरर, रॉकेट को इस जलप्रपात में देख सकते हैं । (2)
21. गुफांतर शिल्पकला का अद्भुत उदाहरण इस गाँव में देखा जा सकता है - नाम पलट गया है। (3)
22. हेमावती नदी पर यहाँ बाँध बनाया गया है । (3)

ऊपर से नीचे -

2. मूकांबिका मंदिर यहाँ है । (3)
3. मडिकेरी के पास का विख्यात जलप्रपात । (2)
4. कोडवा भाषा इस जिले में बोली जाती है । (3)
8. शिवप्पनायक की राजधानी, अब एक जिला केंद्र स्थान भी है । (4)
9. प्रख्यात जोग जलप्रपात इस गाँव में है । (4)
10. साड़ियों को बुननेवाला यह गाँव बागलकोट जिले में है । (4)
12. शरावती नदी को लाँच द्वारा पार कर इस गाँव की चौडेश्वरी देवी के दर्शन करना है । (4)
17. हासन जिले के इस गाँव में बड़े सुरंग द्वारा नदी का पानी बहाया गया है - गाँव का नाम पलट गया है । (3)
18. हलेबीडु के साथ जुड़ा हुआ यह गाँव शिल्पकला का जीता-जागता उदाहरण है । (3)
20. अणु ऊर्जा उत्पादन केंद्र यहाँ स्थापित है - नाम पलट गया है । (2)

उत्तर. बाएँ से दाएँ

1. कोप्पला
4. कोलार
5. गुब्बि
6. मैसूरु
7. गुल्बर्गा
8. शिवगंगे
10. इक्केरि
11. सिरसि
13. जावगल
14. बेंगलूरु
15. चित्रदुर्ग
16. कित्तूरु
18. आगुंबे
19. जोग
21. बादामी
22. गोरूरु

ऊपर से नीचे

2. कोल्लूरु
3. अब्बि
4. कोडगु
8. शिवमोगा
9. गेरुसोप्पा
10. इलकल
12. सिंगदूरु
17. बागूरु
18. बेलूरु
20. कैगा

16. बाल-शक्ति

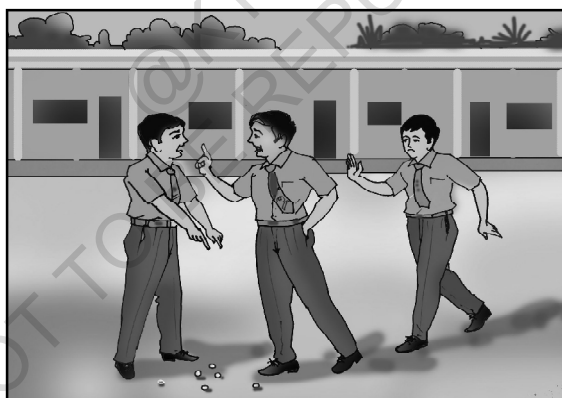


जगतराम आर्य-

बच्चों में अच्छे और बुरे दोनों गुण होते हैं। अच्छी आदतों के द्वारा उनको गुणी बनाया जा सकता है। इस लघु नाटिका में बच्चों की संगठित शक्ति को उजागर किया गया है जो बहुत ही प्रेरणादायक है।

पात्र-परिचय

रामू, श्यामू, मोहन, संजय, किशोर, मनोज - स्कूल के छात्र
गुरुजी - स्कूल के अध्यापक
कलेक्टर साहब
एक बुजुर्ग



पहला दृश्य

(रामू और श्यामू कंचे खेलने में व्यस्त हैं)

रामू : (श्यामू से) हरेवाले को मार।
(श्यामू मारता है)

श्यामू : लग गयी न? ला, अब सारे कंचे मेरे हो गये।

रामू : तेरे कैसे हो गये? निशाना तो नीलेवाले को लगा है। हरा कंचा तो अलग पड़ा है।

श्यामू : झूठ मत बोल। तू सदा खेल में बेईमानी करता है। दे-दे कंचे। वरना मार दूँगा। (रामू की कमीज़ का कॉलर पकड़ता है।)

रामू : छोड़, मेरी कमीज़ छोड़।
(तीसरे लड़के मोहन का प्रवेश)

मोहन : अरे, अरे! क्यों झगड़ रहे हो?

श्यामू : यह मेरे कंचे नहीं देता। खेल में बेईमानी करता है।

रामू : यह झूठ बोल रहा है।

मोहन : देखो, अब तो स्कूल का समय हो रहा है। घंटी बजनेवाली है। यह फैसला बाद में कर लेना।

श्यामू : अच्छा, अब तो छोड़ता हूँ, पर शाम को दे देना।

रामू : चल चल, अपना रास्ता पकड़। बड़ा आया कंचे लेनेवाला।

मोहन : अरे भाई, स्कूल नहीं चलना है क्या?

रामू : तुम जाओ स्कूल, मैं नहीं जाऊँगा। एक दिन स्कूल नहीं जाने से क्या होता है?

श्यामू : मोहन भैया, यह तो कई दिन स्कूल नहीं जाता। जिस दिन भी गृह-कार्य नहीं करता, उस दिन स्कूल से छुट्टी कर लेता है। आज गणित का काम दिखाना है न?

मोहन : रामू! दिखाओ तो गणित की कॉपी।

रामू : वह तो मैं घर भूल आया।

मोहन : देखो रामू, यह ठीक नहीं। एक झूठ को छिपाने के लिए कई झूठ बोलने पड़ते हैं।

श्यामू : चलो मोहन भैया, इसे रहने दो। स्कूल चलने में देर हो रही है, चलो। (दोनों चले जाते हैं। रामू कंचे खेलने लगता है।)

दूसरा दृश्य

(स्कूल में भोजनावकाश का वक्त है। पाँच बालक स्कूल के एक कोने में एकत्र होकर बातें कर रहे हैं।)

श्यामू : देखो न मोहन भैया, आज रामू ने खेल में फिर से मेरे साथ बेईमानी की।

संजय : वह तो बात-बात में झूठ बोलने लगा है।

मनोज : मैंने सुना है कि बारह साल से नीचे की उम्र के बच्चों को तो कोई पाप नहीं लगता। चाहे वह झूठ बोलना ही क्यों न हो।

श्यामू : अरे मूर्ख, यही तो उम्र है अच्छी आदतें डालने की, अब जो आदत पड़ जाएगी, वह सदा साथ रहेगी - हाँ।

किशोर : गुरुजी भी यही कहा करते हैं।

मोहन : हाँ, हमें अभी से अच्छी आदतें डालनी चाहिए। इसके लिए हमें मिलकर कुछ करना होगा।

किशोर, संजय : क्या करना होगा?

श्यामू : हमें एक टोली बनानी पड़ेगी।

मोहन : इस टोली में हम रामू को भी शामिल करेंगे और उसकी गंदी आदतें छुड़वाएँगे।

(टन-टन करके स्कूल की घंटी बजती है।)

मोहन : चलो, अब कक्षाओं में चलें। शाम को सब यहीं मिलना। हाँ, रामू को कौन लाएगा?

संजय : उसे मैं बुला लाऊँगा। वह मेरी बात मानता है।

तीसरा दृश्य



(मोहन, संजय, किशोर, श्यामू, मनोज और रामू बैठे बातें कर रहे हैं।)

मोहन : आज से हम एक छोटी-सी टोली आरंभ कर रहे हैं। उस टोली का नाम होगा 'बाल-शक्ति'।

रामू : यह टोली क्या करेगी?

संजय : सबसे पहले तो हम अपने उन साथियों पर ध्यान देंगे जो नियमित रूप से स्कूल नहीं जाते तथा पढ़ाई से जी चुराते हैं।

किशोर : ठीक कहा। दूसरा काम होगा स्कूल के परिसर को स्वच्छ रखना। तीसरा कार्य होगा गाँव की गंदगी को दूर करना। हम रोज़ एक घंटा गाँव की सफाई में लगाएँगे।

मनोज : गाँव में कई गड्ढे हैं, उनको मिट्टी से ढाँपना होगा।

श्यामू : गाँव का कूड़ा डालने के लिए एक निश्चित जगह बनाएँगे तथा गाँव के सभी भाइयों से कहेंगे कि कूड़ा उसी जगह में डालें।

मोहन : टोली का अगला काम होगा गाँव को हरा-भरा रखना। हम गाँव के चारों तरफ पेड़-पौधे लगाएँगे तथा अपने घरों में भी फलदार पेड़ लगाएँगे।

रामू : यह तो बड़ा नेक काम है। हमें कल से ही काम शुरू करना चाहिए।

संजय : पहले तू यह बता कि तू नियमित रूप से स्कूल जाएगा या नहीं।

रामू : जाऊंगा।

मनोज : हम सबको टोली के नियमों का पालन करना होगा।

सब बच्चे : हाँ, करेंगे।

श्यामू : अपनी टोली के मुखिया के रूप में मैं मोहन का नाम रखता हूँ।
आपकी क्या राय है?

सब बच्चे: हमें मंजूर है।

चौथा दृश्य



(एक साल बाद - गाँव में विशाल सभा का आयोजन किया गया है।
जिले के कलेक्टर, विधायक तथा सरपंच आए हुए हैं। गाँव के सब लोग
उपस्थित हैं।)

कलेक्टर : इस गाँव को साफ-सुथरा देखकर मुझे हार्दिक प्रसन्नता हुई है।
गाँव को एक नया जीवन प्रदान किया गया है। इन बच्चों की जितनी बड़ाई
की जाए उतनी ही थोड़ी है। इन सबने मिलकर गाँव को स्वच्छ वातावरण
दिया है। बाल-शक्ति के कारण आपका गाँव एक आदर्श गाँव बन गया है।

(उपस्थित लोग तालियाँ बजाते हैं)

कलेक्टर : सरकार की तरफ से 'बाल-शक्ति' टोली को पाँच हज़ार रुपये दिए गए हैं। इस टोली का मुखिया आकर यह राशि स्वीकार करे।

(मोहन जाता है। कलेक्टर साहब मोहन को पाँच हज़ार रुपये का लिफ़ाफ़ा देते हैं।)

मोहन : ये रुपये हम प्राधानाध्यापक जी को दे देंगे। स्कूल के पुस्तकालय में गरीब बच्चों के लिए हम पुस्तकों का प्रबंध करेंगे।

एक बुजुर्ग : ये गाँव के सच्चे सपूत हैं।

सभी लोग बोलते हैं - बाल-शक्ति की जय!

पाठ का आशय :

इस पाठ में पाँच-छः लड़के संगठित होकर अपनी बाल-शक्ति को प्रकट कर रहे हैं। कुछ लड़के एक साथ रहकर अच्छी आदतों को अपनाने का प्रयत्न करते हैं। इतना ही नहीं सब बच्चे मिलकर अपने गाँव को एक नया जीवन प्रदान करते हैं। इस पाठ द्वारा बाल-शक्ति का महत्व बताया जा रहा है।

लेखक परिचय :

जगताराम आर्य (सन् 1910-सन् 1993) : जगताराम आर्य जी का जन्म ऊना, हिमाचलप्रदेश में 16 दिसंबर सन् 1910 को हुआ। आपकी पढ़ाई निकट गाँव के डी.ए.वी. स्कूल में हुई। स्कूल के वरिष्ठ अध्यापक पं.तुलसीराम जी की देखरेख में शिक्षा पाई। आप अमर शहीद भगतसिंह के साथ कई क्रांतिकारी घटनाओं से जुड़े रहे। आप स्वतंत्रता आंदोलन के समय भाई परमानंद के साथ भी रहे जो बहुत बड़े देशभक्त थे और उनके साथ कई-कई दिन अज्ञातवास भी किया। 4 अगस्त, सन् 1993 को जगताराम आर्य जी का देहांत हुआ।

शब्दार्थ :

कंचा - ग्लास, Glass Marble; निशाना - लक्ष्य, बेईमानी - अप्रामाणिकता, धोखा; फैसला-निर्णय, गृह-कार्य- घर में करने के लिए दिया जानेवाला अभ्यास, Home Work ; उम्र-आयु, अवस्था; आदत - अभ्यास, स्वभाव ; टोली-मंडली, समूह, Group; शामिल करना - मिलाना, गंदगी - मैलापन, गड़ढ़ा - धरती में गहरा स्थान, ढ़ड़, Pit ; ढाँपना - ढाँकना, छिपाना; कूड़ा - घास-फूस आदि गंदी चीज़ें, फलदार - फल देनेवाला, उपयोगी ; नेक - अच्छा, आयोजन - प्रबंध, इंतज़ाम ; विधायक - व्यवस्था करनेवाला, निर्णय करनेवाला, विधानसभा के सदस्य ; सरपंच - गाँव का मुखिया, बड़ाई - प्रशंसा, लिफ़ाफ़ा - पत्र आदि भरकर भेजने की थैली, सपूत - अच्छा बेटा, अच्छा लड़का।

अभ्यास

I. एक वाक्य में उत्तर लिखिए :

1. कौन-कौन कंचे खेल रहे थे?
2. खेल में कौन सदा बेईमानी करता है?
3. रामू को स्कूल जाने के लिए कौन कहता है?
4. रामू ने किस विषय का गृह-कार्य नहीं किया था?
5. हमें किस उम्र में अच्छी आदतें डालनी हैं?
6. रामू को टोली में लाने की जिम्मेदारी किसने ली?
7. टोली का मुखिया कौन बना?
8. बच्चों की तारीफ किसने की?

II. दो-तीन वाक्यों में उत्तर लिखिए :

1. रामू में कौन-कौन-सी बुरी आदतें थीं?
2. गाँव की सफाई के लिए बालक क्या काम करते हैं?
3. गाँव को आदर्श गाँव कैसे बनाया जा सकता है?

4. कलेक्टर साहब ने बच्चों की बड़ाई में क्या कहा?
5. पाँच हज़ार रुपये मिलने पर मोहन क्या सोचता है?

III. मिलान कीजिए :

- | | |
|------------------------|------------|
| 1. बेईमानी करनेवाला | मोहन |
| 2. टोली का नाम | पाँच हज़ार |
| 3. इनाम के रुपये | बुजुर्ग |
| 4. टोली का मुखिया | रामू |
| 5. ये गाँव के सपूत हैं | बाल-शक्ति |

IV. खाली जगह भरिए :

1. रामू और श्यामू _____ खेल रहे थे।
2. _____ की काँपी घर पर भूल आया हूँ।
3. अभी से अच्छी _____ डालनी चाहिए।
4. _____ की गंदी आदतें छुड़वाएँगे।
5. रोज़ एक घंटा गाँव की _____ में लगाएँगे।
6. कूड़ा डालने के लिए एक _____ जगह बनाएँगे।
7. आपका गाँव एक _____ गाँव बन गया है।

V. शब्द लड़ी बनाइए :

जैसे : कंचा→चारु→रुपया→यार→रमा (अंतिम वर्ण से एक नया शब्द)

1. बालक → _____
2. गाँव → _____
3. टोली → _____
4. फलदार → _____
5. इनाम → _____

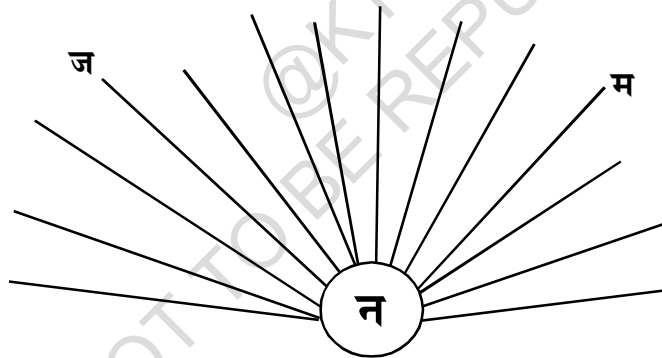
VI. विलोम शब्द लिखिए :

उदा : अपना x पराया

- | | |
|------------------|------------------|
| 1. रात x _____ | 6. हानि x _____ |
| 2. आदि x _____ | 7. तोड़ x _____ |
| 3. आयात x _____ | 8. थोड़ा x _____ |
| 4. आय x _____ | 9. उतार x _____ |
| 5. उल्टा x _____ | |

VII. 'बेईमानी' ईमानी का विलोम शब्द है। 'ईमानी' शब्द से पहले 'बे' उपसर्ग जोड़ने से यह शब्द बना है। इसी तरह अप, अन, कु, बद उपसर्गों (प्रत्यय) को जोड़कर पाँच-पाँच शब्द बनाइए।

VIII.



‘न’ को अंतिम अक्षर के रूप में प्रयोग कर शब्द रचिए:

नमूना: जन मन

IX. अर्थपूर्ण वाक्य बनाइए:

श्यामू		देते हैं।
कलेक्टर साहब	इनाम	बनती है।
मोहन	टोली	खेलते हैं।
बालकों की	कंचा	बनाते हैं।
बालक		लेता है।
		खेलता है।

जैसे : श्यामू कंचा खेलता है।

भाषा ज्ञान

I. व्यक्तिवाचक और जातिवाचक संज्ञाओं को पहचानिए:

मुखिया, कलेक्टर, गाँव, बाल-शक्ति, श्यामू, रामू, बालक, गणित,
मोहन, गुरुजी, मनोज, कमीज़

व्यक्तिवाचक संज्ञा	जातिवाचक संज्ञा

II. इस नाटिका में मार, छोड़, पकड़, बोल, डाल, दे, लगा, मान जैसे अनेक धातुओं का प्रयोग हुआ है। नीचे दिये गये शब्दों को उचित धातुओं के साथ लिखिए:

- | | |
|------------|-------------|
| 1. कमीज़ - | 5. गुस्सा - |
| 2. पेड़ - | 6. सच - |
| 3. रुपये - | 7. बात - |
| 4. कंचा - | 8. कूड़ा - |

विशेष सूचना : 'क्रिया' का मूल रूप 'धातु' है।

III. इस नाटिका में 'संयुक्त क्रिया'ओं का प्रयोग हुआ है जैसे-खेलने लगा, बन गया इत्यादि। इस तरह के क्रिया-युग्मों को ढूँढ़कर सूची बनाइए।

सूचना: संयुक्त क्रिया/क्रिया-युग्म = 'दो क्रियाओं का एक साथ प्रयोग।'

पाठ से आगे -

- * सोचिए, अगर आपका कोई साथी रामू जैसे होता तो उसे सुधारने के लिए आप क्या योजना बनाते?
- * अपना गाँव, अपना जिला, अपना परिसर - सब कुछ अपना है। इन्हें सुधारने के लिए आपने क्या किया है? क्या करना चाहते हैं? अपने मित्रों से चर्चा कीजिए।
- * स्कूल के वार्षिकोत्सव पर इस नाटिका का अभिनय कीजिए।
- * इस नाटिका का अपनी मातृभाषा में अनुवाद कर स्कूल की वार्षिक पत्रिका में प्रकाशित करें।
- * साहस प्रदर्शन या सेवा-कार्य के लिए पुरस्कार प्राप्त बच्चों की कथाओं का चार्ट बनाकर प्रदर्शनी का आयोजन करें।

17. कोशिश करनेवालों की कभी हार नहीं होती



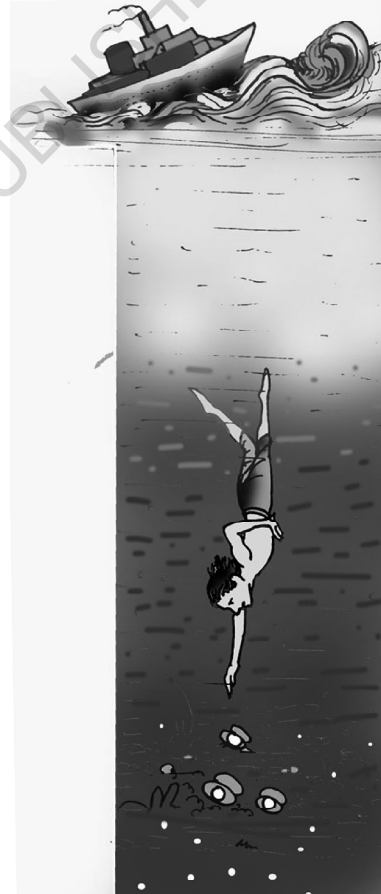
सोहनलाल दिववेदी-

इस कविता में कवि ने यह संदेश दिया है कि सतत प्रयत्नशील व्यक्ति की निश्चित रूप से जीत होती है। समस्याओं से मुँह न मोड़कर आगे बढ़ना चाहिए।

लहरों से डरकर नौका पार नहीं होती,
कोशिश करनेवालों की कभी हार नहीं होती।

नन्हीं चींटी जब दाना लेकर चलती है,
चढ़ती दीवारों पर सौ बार फिसलती है।
मन का विश्वास रगों में साहस भरता है,
चढ़कर गिरना, गिरकर चढ़ना न अखरता है।
आखिर उसकी मेहनत बेकार नहीं होती,
कोशिश करनेवालों की कभी हार नहीं होती।

डुबकियाँ सिंधु में गोताखोर लगाता है,
जा जाकर खाली हाथ लौटकर आता है।
मिलते नहीं सहज ही मोती गहरे पानी में,
बढ़ता दुगना उत्साह इसी हैरानी में।
मुट्ठी उसकी खाली हर बार नहीं होती,
कोशिश करनेवालों की कभी हार नहीं होती।



असफलता एक चुनौती है, इसे स्वीकार करो,
 क्या कमी रह गई, देखो और सुधार करो।
 जब तक न सफल हो, नींद चैन को त्यागो तुम,
 संघर्ष का मैदान छोड़कर मत भागो तुम।
 कुछ किए बिना ही जय-जयकार नहीं होती,
 कोशिश करनेवालों की कभी हार नहीं होती।

कविता का आशय :

इस कविता में कोशिश करने से सफलता प्राप्त करने का संदेश मिलता है। कवि कहते हैं कि जीवन की प्रतियोगिता में असफलता से विमुख न होते हुए अपनी कमियों को खुद पहचानकर स्वप्रयत्न से लगातार आगे बढ़ने से हार कभी नहीं होती है।

कवि परिचय :

सोहनलाल दिववेदी (सन् 1906 - सन् 1988)

सोहनलाल दिववेदी जी हिंदी के सुप्रसिद्ध कवि हैं। आपका जन्म 23 फरवरी सन् 1906 को हुआ। आपने बनारस हिंदू विश्वविद्यालय से एम.ए., एल.एल.बी. की डिग्री ली और आजीविका के लिए जमींदारी तथा बैंकिंग का काम करते रहे। सन् 1938 से सन् 1942 तक आप राष्ट्रीय पत्र 'दैनिक अधिकार' के संपादक थे। कुछ वर्षों तक आपने अवैतनिक (बिना वेतन के) बाल पत्रिका 'बाल-सखा' का संपादन भी किया। आप महात्मा गांधी से अत्यधिक प्रभावित थे।



स्वतंत्रता प्राप्ति के लिए देशभक्ति व ऊर्जा से ओतप्रोत आपकी रचनाओं की विशेष सराहना हुई तथा आपको 'राष्ट्रकवि' की उपाधि से अलंकृत किया गया। सन् 1988 में राष्ट्रकवि दिववेदी जी का देहांत हो गया। आपकी प्रमुख कृतियाँ हैं- भैरवी, वासवदत्ता, कुणाल, पूजागीत, विषपान, युगाधार और जय गांधी।

बाँसुरी, झरना, बिगुल, बच्चों के बापू, दूध बताशा, बाल भारती, शिशु भारती, नेहरू चाचा, सुजाता, प्रभाती आदि आपका प्रमुख बाल-साहित्य है।

शब्दार्थ :

लहर-तरंग, बहाव; नौका-नाव , कोशिश-प्रयास, प्रयत्न ; हार-पराजय, विफलता; नन्हीं-छोटी, लघु; दाना-धान्य, अनाज, कण (Grain); दीवार-भित्ति (Wall), विश्वास-भरोसा, यकीन; रग-नस, स्नायु, नाड़ी (Nerve); साहस-धैर्य, हिम्मत, हौसला (Courage); अखरना-बुरा लगना, मेहनत-परिश्रम, बेकार-व्यर्थ, निरर्थक; सिंधु-सागर, समुद्र, अंबुधि; गोताखोर-तैराक, हैरान होना-आश्चर्यचकित होना, चुनौती-दावा, ललकार; कमी-अभाव, न्यूनता; चैन-आराम, सुख; संघर्ष-टकराव।

अभ्यास

I. एक वाक्य में उत्तर लिखिए :

1. किससे डरकर नौका पार नहीं होती?
2. किनकी हार नहीं होती है?
3. दाना लेकर कौन चलती है?
4. चींटी कहाँ चढ़ती है?
5. किसकी मेहनत बेकार नहीं होती?
6. सागर में डुबकियाँ कौन लगाता है?
7. मोती कहाँ मिलता है?
8. किसकी मुट्ठी खाली नहीं होती?
9. कहाँ से भागना नहीं चाहिए?
10. कुछ किये बिना ही क्या नहीं होती है?

II. दो-तीन वाक्यों में उत्तर लिखिए :

1. चींटी के बारे में कवि क्या कहते हैं?
2. गोताखोर के बारे में कवि के विचार क्या हैं?
3. असफलता से सफलता की ओर जाने के बारे में कवि क्या संदेश देते हैं?

III. जोड़कर लिखिए :

- | | | |
|------------|---|----------|
| 1. लहर | - | डुबकियाँ |
| 2. चींटी | - | चुनौती |
| 3. गोताखोर | - | सुधार |
| 4. असफलता | - | दाना |
| 5. कमी | - | नौका |
| | | सहज |

IV. भावार्थ लिखिए :

नहीं चींटी जब दाना लेकर चलती है,
चढ़ती दीवारों पर सौ बार फिसलती है।
मन का विश्वास रगों में साहस भरता है,
चढ़कर गिरना, गिरकर चढ़ना न अखरता है।
आखिर उसकी मेहनत बेकार नहीं होती,
कोशिश करनेवालों की कभी हार नहीं होती।

V. उदाहरण के अनुसार तुकांत शब्दों को पहचानकर लिखिए :

उदा : पार - हार

1. चलती - _____
2. भरता - _____
3. लगाता - _____
4. बार - _____
5. स्वीकार - _____

VI. सफलता प्राप्त करने से संबंधित शब्दों पर गोला लगाइए :

सार्थक परिश्रम, आत्मविश्वास, आराम से सोना, सतत अभ्यास, हैरान होना, बेकार का काम करना, पराजय का स्वीकार, सार्थक काम करना, कुछ करके देखना, शिक्षा प्राप्ति, भटकना, भाग जाना, भला करना।

VII दिए गए संकेत बिंदुओं के आधार पर 'परिश्रम' पर लघु लेख तैयार कीजिए:

कोशिश
मेहनत
उत्साह
साहस
गिरना-चढ़ना
सहजता
खाली हाथ
चुनौती
संघर्ष
नींद-चैन

VIII. कविता की अंतिम पंक्तियों को कंठस्थ करके लिखिए:

असफलता _____

_____ हार नहीं होती।

IX. अनुरूपता :

1. मेहनत : परिश्रम :: कोशिश : _____
2. चढ़ना : उतरना :: हारना : _____
3. स्वीकार : इन्कार :: चैन : _____
4. सिंधु : समुद्र :: हाथ : _____

कविता से आगे -

* प्रस्तुत कविता की निम्नलिखित कविता की पंक्तियों से तुलना कीजिए :

पर्वत की चोटी छूने को
पर्वत पर चढ़ना पड़ता है।
सागर से मोती लाने को
गोता लगाना ही पड़ता है॥

उद्यम किए बिना तो चींटी
भी अपना घर बना न पाती।
उद्यम किए बिना तो सिंह को
भी अपना शिकार मिल न पाता॥

* खेल, कला, सिनेमा, चिकित्सा, विज्ञान इत्यादि कार्यक्षेत्र में सफलता प्राप्त किए हुए व्यक्तियों की सूची तैयार कीजिए:

क्र.सं.	कार्यक्षेत्र	सफलता प्राप्त व्यक्तियों के नाम
जैसे-	1. क्रिकेट	सचिन तेंडूलकर

- * सफलता, अच्छे काम, उत्साह बढ़ानेवाली प्रेरक सूक्तियों का संग्रह करके लिखिए:

जैसे : हमारी सबसे बड़ी शान कभी गिरने में नहीं है, अपितु जब हम गिरे, हर बार उठने में है। - कनफ्यूशियस

- * निम्नलिखित शब्दों की सहायता से अपने सहपाठियों से, अध्यापकों से चर्चा करके कविता रचने की कोशिश कीजिए:

नाम, धाम, मान, शान, राग, त्याग, योग, शोक, रोक, साहस, प्रयास, दूर, कसूर, बुद्धि, सिद्धि, ध्यान, सम्मान

- * यू ट्यूब में 10 से भी अधिक इस कविता से संबंधित चित्र सहित उदाहरण मिलेंगे। उनका संग्रह कीजिए और कक्षा में इस विषय पर चर्चा कीजिए।



10. कारक

संज्ञा या सर्वनाम के जिस रूप से उसका संबंध वाक्य में अन्य शब्दों के साथ जाना जाता है, उसे कारक कहते हैं।

उदाहरण :

- * मोहन ने सतीश को एक किताब दी।
- * रहीम ने मूर्ति के लिए एक चित्र खींचा।

कारक के निम्नांकित आठ भेद हैं:

1. **कर्ता कारक** - इससे क्रिया (काम) करनेवाले का बोध होता है। इसका कारक चिह्न है 'ने'।

उदाहरण :

- * रमेश ने सुरेश की सहायता की।
- * बाज़ीगर ने अनेक चमत्कार दिखाये।

2. **कर्म कारक** - इससे क्रिया के फल भोगनेवाले का बोध होता है। इसका चिह्न है 'को'।

उदाहरण :

- * मालिक ने नौकरों को वेतन दिया।
- * लोगों ने चोर को पकड़ा।

3. **करण कारक** - इससे क्रिया के होने में सहायता देनेवाले साधन का बोध होता है। इस कारक का चिह्न है - 'से'।

उदाहरण :

- * किसान हल से खेत जोत रहा है।
- * रमेश कलम से पत्र लिखता है।

4. **संप्रदान कारक** - इससे क्रिया करने के उद्देश्य या प्रयोजन का बोध होता है। इस कारक के चिह्न हैं - के लिए, के द्वारा, के वास्ते

उदाहरण :

- * माता ने बेटी के लिए एक अंगूठी खरीदी।
- * नेहा शोभा के लिए पुस्तक लायी।

5. **अपादान कारक** - इससे किसी क्रिया के एक स्थान से हटने या दूर होने का बोध होता है। इस कारक का चिह्न है - 'से'।

उदाहरण :

- * गंगा हिमालय से निकलती है।
- * पेड़ से फल गिरा।

6. **संबंध कारक** - इससे संज्ञाओं के बीच भिन्न-भिन्न प्रकार के संबंध का बोध होता है। इस कारक के चिह्न हैं - 'का', 'के', 'की'।

उदाहरण :

- * सरोवर का पानी स्वच्छ होता है।
- * सोहन के दादा निरक्षर थे।
- * शशि की माता खुश थी।

7. **अधिकरण कारक** - इससे क्रिया के होने के स्थान या समय का बोध होता है। इस कारक के चिह्न हैं - 'में' और 'पर'।

उदाहरण :

- * रमेश के पिता मुंबई में रहते हैं।
- * पेड़ पर अनेक पंछी बैठते हैं।

8. **संबोधन कारक** - इससे किसी संज्ञा को पुकारने का भाव प्रकट होता है। इस कारक के चिह्न हैं - 'अरे', 'हे', 'ओ', 'हो', 'वाह'।

उदाहरण :

- * अरे ! यह क्या हो गया ?
- * वाह ! कितना अच्छा है !

11. 'कि' और 'की' का प्रयोग

* 'कि' कारण बोधक अव्यय है। कार्य कारण वाचक अव्यय के रूप में उप वाक्यों के आरंभ में प्रयोग होता है।

जैसे -

1. राम ने कहा कि उसके पिताजी का नाम दशरथ है।
2. पुलिस ने चोर को इतना पीटा कि वह बेहोश हो गया।
3. बस रुकी भी नहीं थी कि लोग उसकी ओर दौड़ पड़े।
4. पिताजी मुझे पैसे देनेवाले ही थे कि चाचाजी ने कहा “उसे पैसा मत दो।”
5. मैं बाहर जानेवाला ही था कि बारिश होने लगी।

* 'कि' अव्यय के प्रयोग से वाक्यार्थ में विकल्प का बोध होता है।

जैसे -

1. तुम चाय पिओगे कि काफी?
2. राम आया कि कृष्ण?

‘की’ का प्रयोग :

क) स्त्रीलिंग एकवचन तथा बहुवचन सूचक संज्ञा शब्दों के संबंध बताने के लिए ‘की’ का प्रयोग होता है।

जैसे -

भारत की राजधानी
शहर की लड़कियाँ

बेटे की लड़की
मोहन की किताबें
पिताजी की किताब
घर की रोटियाँ
आप की बातें

ख) क्रिया के रूप में भी 'की' का प्रयोग होता है।

जैसे -

राम ने परीक्षा पास की ।
मैं ने दिल्ली की यात्रा की ।
उसने कोई गलती नहीं की ।

ग) संबंधबोधक अव्यय के रूप में निम्नलिखित उदाहरणों में 'की' का प्रयोग देख सकते हैं।

जैसे -

राम की ओर
उसकी तरफ
पेड़ की भाँति



12. विरुद्धार्थक शब्द

कुछ शब्द ऐसे होते हैं, जो एक दूसरे के ठीक विपरीत अर्थ प्रकट करते हैं। इन्हें विपरीतार्थक (विलोम) शब्द कहा जाता है। इनकी रचना प्रत्यय (हीन आदि) तथा उपसर्ग (कु, सु, दु, नि, अ, अन् आदि) की सहायता से होती है। कभी-कभी स्वतंत्र शब्द भी विलोम होते हैं।

कुछ प्रचलित विपरीतार्थक शब्दों की सूची :

- | | |
|--------------------|-------------------|
| 1. अंधकार × प्रकाश | 2. आय × व्यय |
| 3. आगे × पीछे | 4. अमृत × विष/मृत |

ग) उपसर्ग जोड़कर तथा उपसर्ग में परिवर्तन के द्वारा निर्मित विपरीतार्थक शब्द :

- | | |
|-------------------|-----------------------|
| 1. आधार × निराधार | 2. परतंत्र × स्वतंत्र |
| 3. जय × पराजय | 4. सफल × विफल/असफल |

घ) अ तथा अन के प्रयोग द्वारा निर्मित विपरीतार्थक शब्द :

- | | |
|-------------------|----------------------|
| 1. आदर × अनादर | 2. चल × अचल |
| 3. लिखित × अलिखित | 4. आवश्यक × अनावश्यक |

(विशेष : विलोम शब्दों को लिखते समय यह ध्यान में रखना चाहिए कि तत्सम शब्द का विलोम तत्सम हो, तद्भव का तद्भव, विदेशी का विदेशी और देशज का देशज विपरीतार्थक शब्द ही हो।)

* व्याकरण संबंधी अधिक जानकारी के लिए 'यू ट्यूब' देखें।